

नराकास, ग्वालियर की वार्षिक पत्रिका



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रयास

दशम् अंक - 2020-21



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-ग्वालियर
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर



रानी मृगनयनी

किंवदंती प्रचलित है कि 15वीं शताब्दी के ग्वालियर के राजा मानसिंह एक बेहद खूबसूरत गुर्जर लड़की “निन्नी” की सुंदरता और उसके बल कौशल के कायल हो गये और उन्होंने उससे शादी का प्रस्ताव रखा। इस पर गूजरी (निन्नी) ने शादी से पहले राजा के सामने तीन शर्तें रखीं, जिसे मानते हुए पहली शर्त के अनुसार राजा ने निन्नी के लिए अलग महल बनवाया जिसे हम “गूजरी महल” के नाम से जानते हैं। दूसरी शर्त के अनुसार गूजरी के लिए पीने का पानी उसके गांव “राई” की सांक नदी से लाया गया और तीसरी शर्त के अनुसार वह सदा वीरांगना की तरह राजा के साथ रहेगी और इसे चरितार्थ करते हुए जीवन की अंतिम साँस तक वह राजा के साथ युद्ध स्थल में रही और वीरगति को प्राप्त हुई।



गूजरी महल

इतिहासकारों के मुताबिक रानी गूजरी की आँखें इतनी खूबसूरत थीं कि राजा ने उसे “मृगनयनी” नाम दे दिया। मृगनयनी न केवल वीर और साहसी थी अपितु अत्यंत संगीत प्रेमी भी थी। राजा के दरबार के संगीतज्ञ “हरिदास जी” ने उसे संगीत की शिक्षा दी और राजा ने उसके संगीत प्रेम के कारण ही एक शास्त्रीय राग भी उसे समर्पित किया जिसे “गूजरी तोड़ी” के नाम से जाना गया।

सन् 1922 में पुरातत्व विभाग द्वारा “गूजरी महल” को संग्रहालय में बदल कर जनता के



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रयास

दशम् अंक - 2020-21

संरक्षक

डी. साहू

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर



संपादक मंडल

संजीव कुमार झांजी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वर्णलता गुप्ता सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हरिओम कुमार कनिष्ठ अनुवादक

प्रकाशन परामर्शदात्री समिति

डॉ. शिवप्रताप सिंह

प्रधान वैज्ञानिक
केंद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र, ग्वालियर



पवन कुमार

स्नातकोत्तर हिंदी शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय क्र.1, ग्वालियर



स्वर्णलता गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, उनसे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति - ग्वालियर
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर



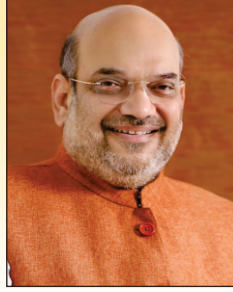
अनुक्रमणिका

क्र.	रचना/लेख/व्यंग्य	रचनाकार/लेखक (सर्व श्री/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
1.	ज्ञान की राह	शशि रौथाण	1
2.	मजदूरों की मजबूरी	विनीत सरन खरे	2
3.	फिर भी जीना है	शालिनी दुबे	3
4.	माँ की पहचान	डॉ. सुनीता कुमारी	4
5.	पुरश्चरण	ब्रह्म आर्य 'आर्यबंधु'	5
6.	दिल की कलम से	वरुण माहेश्वरी	6
7.	अल्पज्ञ हूँ	अलका बाजपेयी	7
8.	इसलिए वो सुंदर है	आभा गुप्ता	8
9.	जन्म दे मुझको हे जननी	उमा उपाध्याय	9
10.	डॉगी	प्रो. डॉ. आलोक शर्मा	10
11.	मैं और मेरी मातृभाषा	गायत्री चौहान	12
12.	होली	अभिदीप रावत	13
13.	मेरे भीतर का बच्चा	आभा गुप्ता	14
14.	माँ	इरम खान	15
15.	विनती	उमा उपाध्याय	16
16.	दिवाली	नित्या	17
17.	यूं सूना अच्छा नहीं लगता	विनीत सरन खरे	18
18.	नारी शक्ति	मनोज कुमार गिरि	19
19.	ख्वाहिश	बिजेन्द्र सिंह	20
20.	तू बढ़ता चल	हरिओम कुमार	21
21.	ईश्वर की मानव को पाती	डॉ. विजिता शर्मा	22
22.	तितली रानी	श्रेयसी शिवहरे	24
23.	जीवन की धारा	अखिलेश चंद्र बाजपेयी	25
24.	मानव और संस्कृति	साक्षी राजावत	26
25.	ग्वालियर में मौसम का हाल	जयदीप शर्मा	27



क्र.	रचना/लेख/व्यंग्य	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ संख्या
26.	आत्मनिर्भर भारत का पर्यटन: एक अवलोकन	अमित तिवारी	28
27.	कृषि का खाद्य व पोषण सुरक्षा में योगदान एवं वर्तमान परिस्थिति	डॉ. शिवप्रताप सिंह, मुरलीधर जे. सदावर्ती, सुभाष कटारे, वी.के. दुआ, संजय रावल मनोज कुमार, संजय कुमार शर्मा, श्याम कुमार गुप्ता, वाई.पी.सिंह, आर.के. समाधिया और सुरेन्द्र सिंह	30
28.	बिन तेरे	मनजीत कुमार सिंह	34
29.	पिता	अंशुल द्विवेदी	35
30.	एनसीसी ओटीए, ग्वालियर में वरिष्ठ स्कन्ध की एएनओज के लिए 90 दिवसीय प्री-कमीशन कोर्स का संचालन	मोनिका जादौन	36
31.	मेरा आत्मनिर्भर भारत	सागर चौधरी	41
32.	...जो बलात्कारी हैं	मनजीत कुमार सिंह	42
33.	इसे बचाएं	पूरनलाल	43
34.	स्वच्छ भारत-बापू का सपना	स्वर्णलता गुप्ता	44
35.	कठिन फैसला	त्रिपुरारी तिवारी	45
36.	भाकृअनुप-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर की भूमिका	डॉ. शिवप्रताप सिंह, मुरलीधर जे. सदावर्ती, डॉ. सुभाष कटारे	46
37.	दैनिक जीवन में हिंदी भाषा का महत्व	त्रिपुरारी तिवारी	51
38.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर		52
39.	आपके अभिमत		53





गृह मंत्री
भारत सरकार

संदेश

प्यारे देशवासियो

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।”

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शांति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की



लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।”

भाइयों, बहनों! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष्य में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल ‘कंठस्थ’ को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए ‘लीला हिंदी ऐप’— *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/विभागों/उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ‘ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप’ तथा ‘ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप’ भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित



होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)





संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर की संयुक्त पत्रिका “प्रयास” के दशम् अंक के प्रकाशन पर मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूर्व की भांति ही “प्रयास” का यह अंक भी पाठकों की उम्मीदों पर बिलकुल खरा उतरेगा व उनकी पाठन अभिरुचि को संतुष्ट करेगा।

यह हम सभी के लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि नराकास, ग्वालियर के सदस्य कार्यालयों के सामूहिक प्रयासों के कारण राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में वृद्धि के साथ-साथ दैनिक जीवन में भी राजभाषा हिंदी के लिए एक आनंददायक वातावरण का विकास हो रहा है। राजभाषा हिंदी के विकास में अपना सार्थक योगदान देना न केवल हमारा संवैधानिक दायित्व है अपितु हमारा नैतिक कर्तव्य भी है। यह बेहद संतोषजनक है कि नराकास, ग्वालियर के 65 सदस्य कार्यालयों के कार्मिकगण पूरी निष्ठा के साथ राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि “प्रयास” का यह अंक राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास में अभूतपूर्व भूमिका निभाएगा। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े समस्त रचनाकार एवं संपादक मंडल अपने सार्थक योगदान के लिए बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

डी.साहू

डी.साहू

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

एवं

प्रधान महालेखाकार



ज्ञान की राह

शशि रौथाण

स्नातक शिक्षिका (अंग्रेजी)
के.वि., सी.सु.बल, टेकनपुर



चलो अपनी राह, आसान बनाते हैं,
संचय करो ज्ञान का, चलो ज्ञान बढ़ाते हैं।

नई-नई तकनीकें, नई हैं ये सब राहें,
परवाह किसे है, अब मुश्किलों की,
कितनी भी हों चाहें।

नया सबेरा, नया दिन सबके जीवन में आएगा,
भारतवर्ष भी किसी से कम नहीं,
अपना परचम लहरायेगा।

नई उम्मीदें, नई है आशा,
जबकि सबकी विभिन्न है भाषा।

पल-पल में बदल रहा संसार,
श्रेष्ठतम बनने की पंक्ति में,
अब तो हैं सारे आसार।

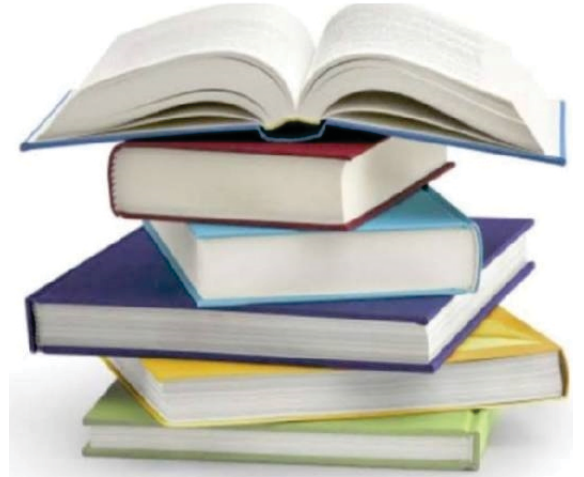
खग-विहग सब चहक रहे,
मंगल मन सब महक रहे।

देखो आया प्रगति का तूफान,
जन-गण प्राप्त कर रहा भरपूर ज्ञान।

पथ-प्रदर्शक बनकर, ज्ञान, सही राह दिखाता है,
सजग रहो, चुस्त रहो, यही हमें सिखाता है।

चलो अपनी राह आसान बनाते हैं,
संचय करो ज्ञान का, चलो ज्ञान बढ़ाते हैं।
राष्ट्र का शीष गर्व से, ऊँचा उठाते हैं,

चलो अपनी राह, आसान बनाते हैं,
संचय करो ज्ञान का, चलो ज्ञान बढ़ाते हैं।



मजदूरों की मजबूरी

विनीत सरन खरे
प्राथमिक शिक्षक
के.वि., सी.सु.बल, टेकनपुर



ये मजदूरों की मजबूरी है,
इसे समझना बड़ा जरूरी है।
यूं काँधे पर बेटी बैठी,
हाथ की उंगली पकड़े बेटा,
चल दिये यूं घर की ओर, करके उनको अदला-बदली।

ना खाना, ना पानी, ना ही हाथ में रुपिया है,
बस उम्मीद लिए, निकल पड़े हैं सड़कों पे।

पाँव में पड़ गए छाले, न कोई देखने वाला है,
बस जिद, कुछ ऐसी है, कि अब तो घर को ही जाना है।

बीमारी का डर, साहब! आपको होगा,
हम तो भूखों ही मर जाते,
जो ना जाते घर को
तो किसको फिर फरियाद सुनाते ?
यूं सुनकर, नन्ही बेटी भी बोल पड़ी,
पापा अब ना शहर को आएंगे
जो मिल पड़ेगा घर में
रूखा-सूखा ही खाएंगे।

ये मजदूरों की मजबूरी है,
इसे समझना बड़ा जरूरी है।



फिर भी जीना है

श्रीमती शालिनी दुबे

कनिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो, ग्वालियर



जीवन की कहानी
ऐसी है जुबानी, रोना—हँसना, पाना—खोना,
खोना—सँजोना, गम में मुस्कुराना।
धार है तलवार है, थपेड़ों की मार है,
उठते गिरते संभलते चलता एक त्योहार है।
कोरोना की जंग हो या युद्ध का माहौल
दूसरों की ईर्ष्या हो या खुद की वेखयाली हो
अन्याय—नफरत का चारों ओर हो शोर
रुकती नहीं जिंदगी चलती रहती हर ओर।
हर ओर है नज़ारा हताशा और निराशा का
फिर भी है डोर आस की, चलना है लड़ना है
मुस्कुराना है जिंदगी के पल को खुश बनाना है
खुश हुए जो हम, तो खुशी दे सकेंगे दूसरों को
दुखी रहकर न काम आ पाएंगे किसी के,
दूसरों की थाली में क्यों है ज्यादा, अपने में क्यों है कम,
न रहे ये मन में, खुद की काबिलियत में हो वो दम।
दुःखी होकर कोई न जी पाया है
तो क्यों न खुश होकर ही जिया जाय
हालात से दो—दो हाथ किया जाय
जियो और जीने दो यही भाव अपनाया जाय
साथ चलें मिलकर यही सबको सिखलाया जाय
जिंदगी की लौ जलती रहे हो गर हर लम्हा संघर्ष का
जीना है वही जो हर स्थिति को अपनाया जाय।



माँ की पहचान

डॉ. सुनीता कुमारी

पी.जी.टी. हिंदी

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1



असहनीय पीड़ा सहकर
शिशु को जन्म देना
नवजात शिशु का मुख देखकर
समस्त वेदना भूल जाना एवं
स्वयं को सबसे भाग्यशाली समझना
जैसे अमूल्य निधि प्राप्त कर ली हो
संसार के समस्त सुखों को पा लिया हो
माँ की पहचान है ये।



संतान की मुस्कुराहट
खिलखिलाहट, किलकारियाँ देखकर
अत्यंत प्रफुल्लित हो जाना
उसका रोना देखकर स्वयं आंसू बहाना
उसके बीमार होने पर, रात भर
जाग कर उसकी सेवा करना
स्वयं की नींद भगाकर
उसको अच्छी नींद सुलाना
ईश्वर से उसके स्वस्थ होने
की कामना करना
माँ की पहचान है ये।

स्वयं को अभाव में रखकर
संतान के लिए, जीवन के
समस्त सुखों को प्रदान करना
उसके समस्त दुखों का
स्वयं पान करके
अपने ममत्व रस का
अमृत पान उसे कराना
स्वयं कांटों पर चलकर
उसके मार्ग पर फूल बिछाना
आजीवन निःस्वार्थ भाव से
अपनी संतान पर
सर्वस्व न्यौछावर करना
माँ की पहचान है ये।

पुरश्चरण

ब्रह्मदेव आर्य 'आर्यबंधु'

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय क्र.1, शक्तिनगर, ग्वालियर



अहं पीठिका पर आसीन
पीले स्वप्नों से भूषित मन
'होता' बनकर कर रहा हवन।

हवनकुंड कर अपने तन को
कामनाओं की समिधा पर
वासनाओं का घृत उड़ेलकर॥

काम—क्रोध—मद—मत्सरता की
लोभ—मोह—ईर्ष्या—ममता की
सप्तजिह्वा लपलपाती अग्नि में
राग—द्वेष की सामग्री से
कर रहा अनवरत हवन।

काम—लपट की तपन सहन कर
हो गया हवनकुंड अति जर्जर
हविष्य शेष है, घृत शेष है
किंतु समय अब अशेष है
कैसे होगा सफल पुरश्चरण ?

रे मन! परपीड़ा की अनुभूति में
कर स्वाहा सभी कामनाओं को
शोषित—वंचित—संतप्तजनों के
हों प्रसन्न वैश्वानर जिससे
भोग लगा फिर भोजन कर॥

'स्व' का विस्तार हो सके जितना, कर
समा सके जिसमें भूमण्डल भर
तब होगा कृतकाम सफल
और पूर्ण होगा यह पुरश्चरण॥

दिल की कलम से...



वरुण माहेश्वरी

पी.जी.टी. (फूड प्रोडक्शन एवं टूरिज्म)
केंद्रीय विद्यालय क्र.1, ग्वालियर

मेरे जीवन का सबसे डरावना दिन
और वो है आप सब का प्यारा रविवार ।।
शनिवार की शाम से तू धीरे-धीरे आता है
मुझको बहुत डराता है
मुझको बहुत डराता है ।
सोमवार से शनिवार तक बहुत प्यार से कट जाता है
लेकिन जैसे ही रविवार तू आता है
मुझको बहुत डराता है
मुझको बहुत डराता है ।
सुबह-सुबह मुझे जगाता है
सप्ताह के सारे काम कराता है
सारे घर आंगन की साफ-सफाई कराता है
तुरंत ही कपड़े भी धुलवाता है
कपड़े भी धुलवाता है
जो मैं गलती से सोचूँ
जो मैं गलती से सोचूँ
कि थोड़ा आराम कर लूँ
फिर मुझसे बाजार के काम भी तू करवाता है
मुझको बहुत डराता है
तू मुझको बहुत डराता है ।
जो दोपहर का समय आए
जो दोपहर का समय आए
मेरे मन में एक ख्याल आए

कि अब थोड़ा सो जाता हूँ
फिर चुपके से तू आता है
फिर चुपके से तू आता है
मुझसे कपड़े प्रेस भी करवाता है
मेरे भाई तू क्यों आता है
मेरे भाई तू क्यों आता है ।
शाम को जो मैं सोचूँ
शाम को जो मैं सोचूँ कि थोड़ा घूम कर आता हूँ
इतने में पीछे से छुपते-छुपाते तू आता है
धीरे से मेरे कान में
धीरे से मेरे कान में
सरकारी नौकरी के आवेदन की याद दिलाता है
धीमे से याद दिलाता है
जो मैं इसको बुरा कहूँ
जो मैं इसको बुरा कहूँ
फिर ये पलटवार दिखलाता है
और मुझसे और मुझसे कहता है
कि सोमवार से शनिवार तक की
परेशानियों से मैं ही तुझे बचाता हूँ
हाँ मैं ही तुझे बचाता हूँ
मुझको बहुत डराता है
भाई मुझको बहुत डराता है ।।

अल्पज्ञ हूँ

अलका बाजपेयी

परा स्नातक शिक्षिका (अंग्रेजी)
केंद्रीय विद्यालय क्र.1, ग्वालियर

अतिरिक्त भावों से रहित,
 अल्पज्ञ हूँ, विस्तार रहित,
 सब जन एक समान न होते,
 कुछ कह जाते, कुछ सुनते हैं बहुत,
 माना कि मैं अतिरेक भावों से शून्य हूँ,
 पर कहाँ दुनियादारी से विलग हूँ।
 जब जीर्ण-शीर्ण काया हो,
 स्पंदन रहित, अनाकर्षक,
 जब साँसों किंचित, भय विकराल समाया हो,
 न रूप, न लावण्य, निस्तेजक,
 जब दृष्टि विहीन, गहन साया हो,
 न मोहकता, न रोचकता, विकृत,
 जब अस्त-व्यस्त गहराया हो,
 दारुण दुःख-दर्द, वक्र देहयष्टि,
 ऐसे में जो साथ चले, बस वह ही सच्चा साथी है।
 कड़वाहट से दूर रहे, सुख-दुःख में सहभागी है।
 संवेदन, सरल, सुगम, सहचर मेरी प्यारी कविता।
 कविता स्वप्नों का मूर्त रूप, कविता यथार्थ का चित्रण है,
 कविता जगती का अलंकार, कविता समाज का दर्पण है,
 मन के भीतर तक गहरे घावों को भर देती है कविता।
 सुंदर, मंगलमय भावों को गहरा कर देती है कविता।।



इसलिए वो सुंदर है

आभा गुप्ता
वरिष्ठ उद्घोषक
आकाशवाणी, ग्वालियर



मेरे अश्रु उसकी आँखों में
इसलिए वो सुंदर है
मेरी खुशी उसकी मुस्कान
इसलिए वो सुंदर है
मेरे चेहरे का नूर उसकी आँखों में
इसलिए वो सुंदर है
उसका हर रिश्ता ईमान से महकता
इसलिए वो सुंदर है
उसकी कथनी और करनी एक
इसलिए वो सुंदर है
प्रीत का रंग ही उसका वर्ण
इसलिए वो सुंदर है
मेरी आशा उसका विश्वास
इसलिए वो सुंदर है
उसके पंख, मेरी उड़ान
इसलिए वो सुंदर है
उसकी जिंदगी मेरे लिए सौगात
इसलिए वो सुंदर है
मेरे ख्वाबों की ताबीर है
इसलिए वो सुंदर है

जन्म दे मुझको हे जननी

उमा उपाध्याय

पुस्तकालयाध्यक्ष

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-3, ग्वालियर



जन्म दे मुझको हे जननी
मैं धरा पर आऊं तो ।
कोख में टुकड़े किए क्यों
मुझको यह बतलाओ तो ।
तेरा ही अस्तित्व हूँ,
तेरी ही परछाई हूँ मैं ।
कतरा—कतरा गल रही,
औजार से छलनी हूँ मैं ।
करुण क्रंदन सुन सको तो,
क्रूर करनी रोक लो ।
जन्म दे मुझको हे जननी...

नर पिशाचों की वजह से,
क्यों तेरा संबल गिरा
अब नहीं अबला है तू
किसने तुझे निर्बल किया ।
मैं हूँ लक्ष्मी, हाड़ी रानी
मुझको तो स्वीकार लो ।
जन्म दे मुझको हे जननी...

मैं करुं सुरभित घर—आंगन,
मैं भी तो वरदान हूँ ।
मैं तेरी छवि बन रहूँगी,
तेरी ही आवाज हूँ ।

यह छलावे का है दलदल,
यह बवंडर तोड़ लो ।
जन्म दे मुझको हे जननी...

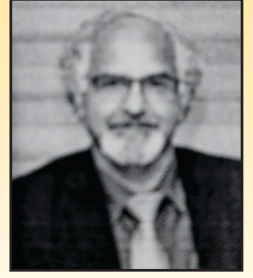
अश्क मेरे तुझसे पूछें
आहें पीड़ा पालती,
मुझ में भी संभावनाएं
क्यों नहीं पहचानती?
मुझको भी आकार दो,
मेरा पिघलना रोक लो ।
जन्म दे मुझको हे जननी
मैं धरा पर आऊं तो...



डॉगी

प्रो. डॉ. आलोक शर्मा

निदेशक, भारतीय पर्यटन एवं यात्रा
प्रबंधन संस्थान, ग्वालियर



खूबसूरती का चरम थी,
वो जगह,
जन्नत का अहसास कराती थी,
सफेद बर्फीली चादर से ढकी,
हीरे सी चमकती,
ओस की बूंदों को,
अपने ऊपर टांके हुए थी,
वो सफेदी ...
जिधर देखो, देखते ही रह
जाओ,
ऐसी छटा बिखरी थी,
कश्मीर के गुलमर्ग में,
फूलों की घाटी कहते हैं इसे ...
शायर कहते हैं
इस धरा पर
जन्नत, यदि कहीं है ...
तो यहीं हैं ... यहीं है ... यहीं है

मैं इस बर्फीली चादर के,
सफेदों में सबसे,
खूबसूरत सफेद रंग
के चमत्कार के दर्शन में,
मैं अटका हुआ था ...
और भी बहुत से लोग थे, इसी तरह,
प्रकृतिजन्य सौंदर्य को,

निहारने में लिप्त थे
कि अचानक ...
पर्यटन के लिहाज से,
कल्पना से भी परे,
इस खूबसूरत स्थल के
खूबसूरत तत्व,
इस बर्फ की बिछात पर,
सबका ध्यान
एक लाल रंग के निशान पर
जाता है ...
एक कलाकार दिमाग,
विश्लेषण कर कहता है
ये जगह वैसे ही इतनी सुंदर है,
फिर यहां गेरु की,
इस अतिरिक्त कलाकारी की,
जरूरत तो नहीं थी ...

ऐसी बहुत सी बोध-अबोध
चर्चाओं के बीच,
अचानक ये सहमति बनी,
कि ये किसी मनुष्य द्वारा
पान या गुटका खाकर,
यहां की गयी पीक है ...
पर एक लाल होंठों वाले,

दबंग टाइप आदमी ने बात काटी
उसने जोर देकर कहा ...
“नहीं ... अभी मैंने यहां एक,
कुछ लाल मुंह का कुत्ता देखा था...

और वो ही ये यहां कुछ ...
लाल-लाल उगल गया है।

वो दबंग था, ताकतवर भी ...
शेष ने एक-दूसरे की आँखों में झाँका,
और सब प्रतिक्रिया विहीन हो गए...

एक पागल से फकीर ने ये देखा,
अपनी आंखें बंद कीं,
सत्य पर पड़े आवरणों को हटाया...

और कहा कि
“हाँ, यहां एक कुत्ते ने ही,
इस खूबसूरत जगह पर,
गुटका खाकर ये पीक की है,
साथियों उसे सौंदर्य बोध नहीं था

न ही वो पर्यावरण के प्रति सचेत था,
हाँ ... वो आदमी नहीं है,

वो आदमी नहीं हो सकता है...
आओ हम सब,
ऐसे कुत्तों को
ईश्वर से आदमी बना देने की
प्रार्थना करें ...

सब लोग व्याकुल व शांत थे ...
सबने अपनी-अपनी आँखें बंद कीं
और हृदय से प्रार्थना करने लगे...

“हे प्रभु इन गंदगी फैलाने वाले कुत्तों को
आदमी बना दें ... आमीन ...”

लाल होंठों वाले दबंग ने
इन्हें हिकारत की,
तिरछी दृष्टि से देखा,
और एक तरफ चला गया ...

मैं और मेरी मातृभाषा

गायत्री चौहान कक्षा IX B
के.वि., सी.सु.बल, टेकनपुर



सभी राज्यों के लोगों को मातृभाषा दिवस का अभिनंदन। भारतवर्ष में हर प्रांत की अपनी एक अलग संस्कृति है जिसकी अपनी एक अलग पहचान है। उनका अपना एक विशिष्ट भोजन है, संगीत है और लोकगीत है। इस विशिष्टता को बनाये रखना, इसे प्रोत्साहित करना अति आवश्यक है। मातृभाषा दिवस को मनाने का प्रयोजन भी यही है। हमारी जिम्मेदारी है इस देश का एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमें अपनी और दूसरों की मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए और उसका महत्व समझने के लिए औरों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

मातृभाषा क्या है?

जन्म से हम जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, वही हमारी मातृभाषा होती है। एक बच्चा अपने घर में अपने माता-पिता और घर परिवार के अन्य सदस्यों से जो भाषा बोलना सीखता है वह मातृभाषा होती है। भाषा एक माध्यम है जिससे हम अपने विचार दूसरों के सामने प्रकट कर सकते हैं। यह दो प्रकार की होती है मौखिक और लिखित। मौखिक भाषा का अर्थ है जो भाषा हम मुंह से बोलते हैं और लिखित भाषा का अर्थ है जिसे हम लिखते हैं। सभी संस्कार एवं

व्यवहार हम अपनी मातृभाषा से पाते हैं। यह न केवल हमें हमारी संस्कृति से जोड़े रखती है बल्कि हमारी संस्कृति जैसी अमूल्य धरोहर को आगे भी बढ़ाती है।

आज के इस दौर में जब लोग अपने संस्कार और अपनी संस्कृति को भूलकर आगे बढ़ते जा रहे हैं। तो ये बहुत जरूरी बन चुका है कि लोगों को ये समझाया जाए कि हमारी संस्कृति और मातृभाषा बहुत ही खास है और हमारे लिए बहुत जरूरी भी है। आजकल जब छोटे बच्चों से पूछा जाता है कि “ए,बी,सी,डी” आती है तो शायद ही जवाब ना हो लेकिन वहीं अगर “क,ख,ग, घ सुनाने को कहा जाए तो ज्यादातर का जवाब ना होता है।

मैं ये नहीं कह रही हूँ कि अंग्रेजी बोलना और उसका प्रयोग करना गलत है पर इसका मतलब ये तो नहीं है कि हम अपनी मातृभाषा को भूलकर ही इसे सीख सकते हैं। जरूरी नहीं कि आप 10 से 15 भाषाएँ सीखें पर कम से कम अपनी मातृभाषा को तो जरूर सीखना चाहिए। किसी भी नई भाषा को सीखना बहुत ही अच्छी बात है और ये आपको नये प्रांत में जाने पर वहां के लोगों से जुड़ने में मदद भी करेगी लेकिन अपनी मातृभाषा को महत्व देना हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।

मातृभाषा हिंदी



होली

अभिदीप रावत कक्षा-तृतीय
के.वि., सी.सु.बल, टेकनपुर



होली आई, होली आई,
रंगों की बारिश है लाई।

खेलो, चलो, छोड़ो काम,
मस्ती करो धमाचौकड़ी तमाम।

अन्दर से बेफिक्र हो जाओ,
न सोचो कि है कोई काम।

होली आई, होली आई,
गुलाल पिचकारी की बहार है लाई

रंग-गुब्बारे सभी हुए खल्लास,
कोई न बैठा है उदास,

गुजिया, दही-बड़े खाकर,
सभी में भर गया है हर्ष और उल्लास।

होली आई, होली आई,
रंगों की बारिश है लाई।

मेरे भीतर का बच्चा

आभा गुप्ता
वरिष्ठ उद्घोषक
आकाशवाणी, ग्वालियर



मेरे मन के एक कोने में...
छुपकर रहता है, एक बच्चा।
मासूम सा फरिश्ता।
कभी टुनकता है, छोटी सी बात पर
खुश हो जाता छोटी सी सौगात से।
कभी सहम जाता है ...
जीवन की कठोरता से।
कभी पुलक उठता है ...
जीवन के सौंदर्य पर।
है तो बस वो 'बच्चा'
लेकिन साथी है सच्चा।
वही पढ़ाता है मुझे ...
इंसानियत का पाठ।
वही अहसास कराता है ...
रिश्तों की मिठास।
प्रेम का ताप।
ऐ... मेरे भीतर के बच्चे ...
तू कभी बड़ा मत होना।
अपनी मासूमियत मत खोना।

तेरी ही बदौलत मैं सहज हूँ।
जीवंतता से पूर्ण हूँ।
तू जब बतियाता है
तो मैं मुस्कराती हूँ।
तू जब किलकता है ...
तब बच्ची बन जाती हूँ।
ऐ मेरे मित्रों ...
झांको... अपने मन के अंदर।
वहाँ भी होगा एक बच्चा।
उसे मनाओ, उससे बतियाओ ...
पर उसे कभी 'बड़ा' मत बनाओ।
अगर वो 'बड़ा' हो गया ...
तो स्वार्थी हो जाएगा।
तब जीवन से प्रेम,
सरलता और जीवंतता का ...
लोप हो जाएगा।
और ये जीवन यांत्रिक ...
और शुष्क हो जाएगा।

माँ

इरम खान, कक्षा-8
के.वि., सी.सु.बल, टेकनपुर

माँ बच्चे को प्यार से निहारती है, दुलारती है।
उसको प्यार के आँचल में,
ममता की छाँव में सुलाती है।
उसे जब वह प्यार से खाना खिलाती है,
उसकी मुस्कान देखकर,
उसकी सारी थकान दूर हो जाती है।
उसके दुःख दूर करने के लिए,
वह सारी दुनिया से लड़ जाती है।
जब वह इसमें कामयाब हो जाती है,
तो वह अपने को खुशनसीब समझ पाती है।
माँ बच्चे के लिए अनमोल होती है,
तभी तो कहते हैं,
माँ के कदमों के नीचे जन्नत होती है।
माँ जब दुआ करती है, तो खुदा भी सुनता है।
क्योंकि उसमें उसका निःस्वार्थता का भाव झलकता है।



विनती

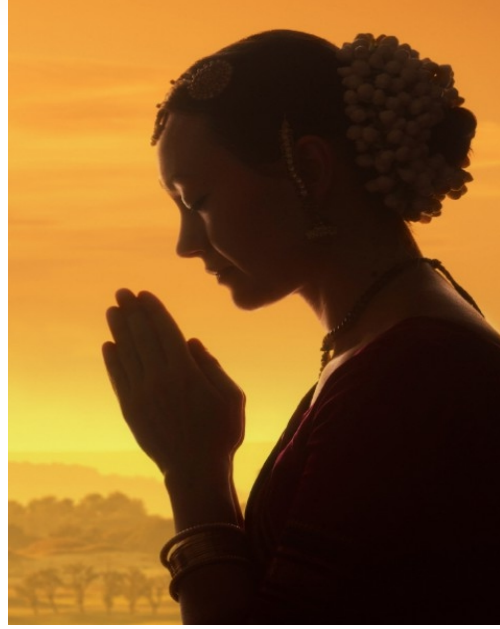
उमा उपाध्याय

पुस्तकालयाध्यक्ष

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-3, ग्वालियर



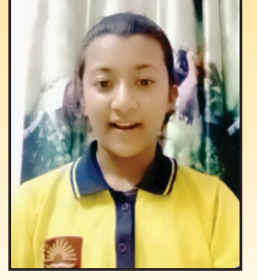
हे परमेश्वर, कालचक्र की
गति को रोको, बहुत हुआ।
प्रलय मचाती इन लहरों को,
अब तो रोको, बहुत हुआ।
थकी लेखनी, श्रद्धांजलि
देते-देते बेहाल हुई,
शब्द हुए निष्प्राण सभी के,
विनती अस्वीकार हुई
अशकों की इस बाढ़ को रोको
दिखता है बस धुँआ-धुँआ
हे परमेश्वर ...



आहत मन, सहमी सांसे,
कितनों का संग छोड़ रहीं।
कैसी कठिन परीक्षा भगवन,
आशा भी मुख मोड़ रही।
व्याकुल मानव की पीड़ा ने,
अब तक तुम को छुआ नहीं।
हे परमेश्वर ...

खोलो तीजा नेत्र त्रिलोचन,
वसुधा का क्रंदन सुन लो।
प्रेम सुधा रस बरसाकर
इन सांसों में जीवन भर दो।
दया करो, हे दयानिधि प्रभु
तांडव रोको बहुत हुआ।
हे परमेश्वर ...





दिवाली

नित्या, कक्षा 6

के.वि., सी.सु.बल, टेकनपुर

दिवाली का त्योहार है आया,
अपने संग खुशियाँ है लाया।

जलते दीये, जलती बाती,
घर-घर में खुशियाँ हैं आती।

इस दिन हुई अच्छाई की जीत और बुराई की हार
और रावण हुआ दुनिया से पार।

हर घर-घर में उजाला है छाया
नहीं कोई इस दिन मिठाई से बच पाया
दिवाली का त्योहार है आया
अपने संग खुशियाँ है लाया।

इस दिन हमने खूब पटाखे हैं जलाए
पूरे आसमान में सितारे हैं फैलाए।

दिवाली का त्योहार है आया,
अपने संग खुशियाँ है लाया।

यूं सूना अच्छा नहीं लगता

विनीत सरन खरे

प्राथमिक शिक्षक
कै.वि., सी.सु.बल, टेकनपुर



यूं सूना ...
अच्छा नहीं लगता, मेरा विद्यालय

वो रेतीला सा मन—मुटाव
सामंजस्य और ठहराव

वो, नन्हें कदमों की हलचल
जह तह भागम—भाग।

वो तरकश के तीरों की जमघट
सर्वव्याप्त और बिखराव

वो गुंजन—सा हर्षित शोर
उत्कल और अनवरत

यूं सूना ...
अच्छा नहीं लगता, मेरा विद्यालय।

वो व्यस्तता के अनंत पल
मुट्ठी भर सुकून

यूं सूना अच्छा नहीं लगता...

वो नए दिन की ललक
ऊर्जा और उत्साह

वो दिन ढलने का मलाल
बेमन और थकान

वो अद्भुत तरकीबों का संगम
बहाने और गवाही



नारी शक्ति

॥ यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः ॥

मनोज कुमार गिरि, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
के.वि., सी.सु.बल, टेकनपुर, ग्वालियर



नारी बिन नर कभी न पूरा है।
हर कार्य बिना नारी के,
नर के जीवन में सदा अधूरा है।
शिव भी तो शक्ति के बिना,
कहाँ हुए पूरे हैं?
तभी तो अर्द्धनारीश्वर रूप में,
प्रकृति के साथ दिखते पूरे हैं।
नारी बिना नर के हर मंतव्य अधूरे हैं।
हर क्षण, प्रतिपल नर के साथ,
नारी का सहयोग आता है।
नारी के प्रत्येक रूप से,
नर का जीवन खिल जाता है।
नारी बिन नर के हर स्वप्न अधूरे हैं।
नारी बिन नर के हर मंतव्य ...
प्रत्यक्ष रहे या अप्रत्यक्ष,
नर के हर निर्णय में,
नारी की भी हिस्सेदारी है।
उस हर क्रिया-कलाप के क्षण में,
नारी की ही शक्ति सारी है।
जो नर की शक्ति बन
उसके हर मंतव्य करे पूरे है।
नारी बिन नर के हर मंतव्य ...
ऊषा से संध्या तक,
लक्ष्मी की आराधना में,
नर व्यस्त होता है।
संध्याकाल थक-हार फिर,
शिथिल निद्रा देवी की गोद में,
निशा से भोर तक सोता है।
आकुल उदर भरने भी,
अन्नपूर्णा तभी आएंगी,
जब विद्या ग्रहण करने में,
सरस्वती देवी के आशीष पूरे हैं।
नारी बिन नर के हर मंतव्य ...

प्रातःकाल नर मंदिर में,
ज्योति जला श्रद्धा से पूजा,
अर्चना, वन्दना आरती करता है।
गीता, गायत्री के श्लोकों से,
हृदय में शांति धरता है।
स्नेह, प्रेम और क्षमा भावना
युं आराधन से हृदयंगम करता है।
तभी नर के सर्वसंकल्प होते पूरे हैं।
नारी के बिना नर के हर मंतव्य ...
अस्वस्थ हुए नर में जब,
शक्तिहीनता आती है।
तभी उसे प्रकृति में,
तुलसी की महिमा भाती है।
तब माँ की ममता ही,
हर संकट से उसे बचाती है।
बिन माँ की करुणा के,
नर के हर स्वप्न कहाँ हुए पूरे हैं
नारी बिन नर के हर मंतव्य ...
इसीलिए नर के जीवन में,
नारी के हर रूप की भूमिका आई है
माँ, बहिन, पत्नी और बेटी बन,
नर के जीवन की फुलवारी महकाई है।
इनके बिना नर तो क्या,
नारायण भी अधूरे हैं।
नारी बिन नर के हर मंतव्य ...
नर हो ना इसीलिए,
तुम खुद पर अभिमान करो।
नारी बिन अस्तित्व नहीं तुम्हारा,
इस सत्य को सहज स्वीकार करो।
नारी से ही नर जीवन में,
सदा रहे खुशियों के घेरे हैं।
नारी बिन नर के हर मंतव्य ...

स्वाहिश

बिजेन्द्र सिंह

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 5, शास्त्री नगर, थाटीपुर, ग्वालियर



मैं भी जीना चाहती हूँ इस जमीं पर,
हरित धरा की नमी पर,
मैं भी खेलना चाहती हूँ अपनी सहेलियों के साथ,
पढ़ना चाहती हूँ अपने भाइयों के साथ,
मैं भी चलना चाहती हूँ आपकी उंगली पकड़कर,
सोना चाहती हूँ आपकी मीठी आवाज सुनकर,
तेरे आंगन की किलकारियाँ बनकर रहना चाहती हूँ,
हे माँ! तुझसे मैं कुछ कहना चाहती हूँ,
मत फेंकना मुझे कचरे के डिब्बे में, अस्पताल के पीछे,
किसी नदी नाले में, किसी झाड़ी के नीचे,
हे माँ! मुझे भी जीना है, मैं जिंदा रहना चाहती हूँ,
तेरे आंगन की किलकारियाँ बनकर रहना चाहती हूँ,
किसी दिन बनूंगी आपकी आँखों का तारा,
सबका सहारा, देखेगा जग सारा,
कितनी ही हो बेबसी, मजबूरी पर निर्दयी मत बनना,
अपनी ममता की कोख को कलंकित नहीं करना,
तेरे आँगन में भी खेलेगी नन्ही मुस्कान,
मत लेना माँ! एक बिटिया की जान,
यह पाप ... महा पाप यदि तू कर जायेगी,
इस कलंक से तू कभी मुक्त न हो पायेगी,
उठ जायेंगी उंगलियाँ पवित्र रिश्ते पर न रहेगा मानव, मानव,
सारी दुनिया बनके जिएगी दानव,
तुझे बनना है एक सच्ची माँ और माँ का फर्ज निभाना है,
हर एक कन्या का जीवन बचाना है,
मेरे जीवन की खातिर तुझे कठिन प्रतिज्ञा लेना है,
मुझ जैसी नन्हीं कलियों को जीवन देना है,
जिंदगी के हर मोड़ पर तुझे अपना फर्ज निभाना है,
हर एक कन्या का जीवन बचाना है,
जीवन बचाना है।



दुर्भाग्य नहीं उस प्राणी का,
जिसने बेटी का जन्म लिया,
यह सफल भेंट है प्रकृति की,
जिसने हम सबको जन्म दिया,
अभागे हैं मनुष्य सभी
जो बेटों के जन्म को रोते हैं,
जिनके बेटी ने जन्म लिया,
वो किस्मत वाले होते हैं।

..... बेटी दिवस विशेष

तू बढ़ता चल...

हरिओम कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) म.प्र., ग्वालियर



तू बढ़ता चल ऐ वीर मनुज,
है रुकना तेरा काम नहीं,
रुक गया अगर तू आज यहां,
मंजिल को कैसे पाएगा,
मिट जाएगा तू आज यहां,
कल कैसे जाना जायेगा,
बढ़ते जाना जीवन-पथ पर,
वीरों का है पैगाम यही,
तू बढ़ता...

क्या भय तुझको बाधाओं का,
बाधा क्या तुझको रोकेगी,
निश्चय को तेरे देख अडिग,
खुद झुक रास्ता दे देगी,
तू ईश्वर का वरदान अटल,
हर मुश्किल से लोहा लेगा,
खा जाती जिसको रात यहां,
मिटने वाली तू शाम नहीं,
तू बढ़ता...

क्या लेकर तू आया था यहां,
जिसको खोने का भय तुझको,
क्या यहां से लेकर जायेगा,
जो है संचित करना तुझको,
कायर, कृतघ्न, पापी है वह,
जो यहां लोभ-धन धरते हैं,
रह जाएगा जो शेष यहां,
बस नाम तेरा कुछ और नहीं,
तू बढ़ता...

खो गये यहां कितने राही,
जीवन की दुर्गम राहों में,
वे भटक गये जीवन पथ से,
खोकर बहार की बाहों में,
है काम भटकना जुगनू का,
कब तारे भटका करते हैं,
जो छलक जाते होंठों तक आ,
तू वो विष व्यापी जाम नहीं,
तू बढ़ता...

तू है सत्य की शान यहां,
मानवता की पहचान यहां,
गर्वित जिससे मस्तक सबका,
तू धरती का स्वाभिमान यहां,
हैं कार्य तुझे करने ऐसे,
जो कर दे अमर मानवता को,
क्या होगा जीवन समर शेष,
ये सोचना तेरा काम नहीं,
तू बढ़ता...

तू वर्तमान में आज खड़ा,
कंधों पर भूत का भार लिए,
रचना है तुझे कल का भविष्य,
मानवता का पैगाम लिए,
कर दे तू पाप का नाश आज,
चहुँ ओर बसा दे राम राज,
तू है सतयुग का हरिश्चंद्र,
तू है त्रेता का राम वही,
तू बढ़ता...

ईश्वर की मानव को पाती

डॉ. विजिता शर्मा
केंद्रीय विद्यालय क्र.-5, ग्वालियर



विश्व का घटनाक्रम देख रहे हो!

इसे मेरी चेतावनी या अनुग्रह मेरा, तुम मान लो

अब भी समय है मानव! अंत दूर नहीं, ये जान लो

तूने सृष्टि का कोना-कोना नष्ट कर डाला

मूक प्राणियों को तो तूने आधुनिकता के नग्न नृत्य में जिंदा ही जला डाला

तूने स्वाद के लिए गर्भ के भ्रूण को खाया है

सौंदर्य के लिए निरीह पशुओं को जीवित पकाया है

तूने सृष्टि का कण-कण नोच डाला

बर्बरता, क्रूरता का तुमने नव इतिहास रच डाला

तूने गाय को निर्ममता से मारा

उसको 'बीफ' बनाकर बाजार में बेच डाला

तुम्हारे हाथ नहीं काँपे जब तुमने स्त्री का शील हरण ही नहीं किया, वरन् उसको तड़पाकर मारा

माता-पिता को घर से बाहर फेंका और घृणा की आग में मानव ने मानव ही का धड़, दो टुकड़ों में काट डाला



अभी तो बस प्रारंभ है भयभीत अभी क्यों हो,
 कर्मों का लेखा—जोखा ज़रा पूरा गिनने तो दो
 क्या लिखूं और कितना मेरी लेखनी सूख जायेगी
 किंतु हे मानव! तुझे लाज अब भी न आयेगी
 पृथ्वी तो थी सबकी तुम इसे सिर्फ अपनी समझने की भूल कर रहे हो
 शिशुपाल के सौ पाप क्षमा किए थे मैंने, तुम तो अगणित कर रहे हो
 वाह रे मानव! हो गया तुझे अपनी शक्ति पर इतना अभिमान
 मदमस्त हो गया तू रहा तुझे न मेरी शक्ति का भान
 रावण तो था तुझसे भी बलशाली
 किंतु उसके भी अभिमान ने बुद्धि उसकी हर डाली
 दुर्योधन का भी था वैभव अति विशाल
 किंतु अपने हठ में माना ना था वो मेरा शांति प्रस्ताव
 मैंने मानव और पशु अलग—अलग बनाए
 तुम बने पशु और पशु ने मानवता के पाठ पढ़ाए
 फिर भी घड़ा भरा नहीं है अभी, रोक सको तो रोक लो अपना अंत
 सींच सको तो अब भी सींचो अमृत से ये विष कुंभ
 नहीं तो अग्नि है तैयार बस हवन है बाकी
 कर्मों के अग्निकुण्ड में होम होने की करो अब तैयारी
 पुनः त्रिनेत्र खुलने दो, पुनः विध्वंस का ताण्डव हो
 पुनः मंथन हो, पुनः नव तान हो,
 पुनः नव स्तर गुंजित हो
 पुनः नवल सृष्टि का निर्माण हो,
 पुनः नवल सृष्टि का निर्माण हो ...



तितली रानी

श्रेयसी शिवहरे

कक्षा-5, बी

केंद्रीय विद्यालय क्र.5, शास्त्री नगर, ग्वालियर



मैं हूँ एक तितली रानी
पीती हूँ मैं रस और पानी
दुनिया मेरी रंग-बिरंगी
सुंदर फूल हैं मेरे संगी
मेरे पंखों पर प्रकृति के रंग
जिन्हें देख सब होते दंग
पीती हूँ मैं फूलों का रस
पीठ पे अपने पंखों को कस
जाती हूँ जब जाल में फंस
होता मुझे तब बहुत ही रंज
बस दूर से देखो मेरे रंग
मत करना कभी मुझे तंग।



जीवन की धारा

अखिलेश चंद्र बाजपेयी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा—प्रथम) म.प्र., ग्वालियर



न सवालों को देखो
न जवाबों को देखो
ये जिंदगी है इसके बहावों को देखो
रुक—रुक कर बहती है या बहते—बहते
रुकती ही रही
ये जीवन की धारा है
ऐसे चली है चलती रहेगी।

कुछ ने सोचा किनारे मिलेंगे
किनारे मिलेंगे सहारे मिलेंगे
सहारों के सहारे अपने मिलेंगे
ये सपना है या दिवास्वप्न कोई
न अपना यहाँ, न कोई किनारे मिलेंगे
ये जीवन की धारा ऐसे बही है
ऐसे बहेगी जीवन की धारा।

सितारों ने कहा चांद से इक दिन
रोशनी तुम्हारी है हमसे ज्यादा
अंधेरा मिटाने को तुम हमसे आगे
रखा तुमने पक्का इरादा
बात सुनकर चांद चुप ही रहा
मंद—मंद मुस्काता ये बताता रहा
सूरज से मिली रोशनी
अपना यहां कुछ भी नहीं
धर्म अपना करना यही है
ये जिंदगी हमारी, हमारी नहीं है
ऐसे बही है जीवन की धारा
ऐसे बहेगी जीवन की धारा।

कांटों के संग हमेशा मुस्कराता है पुष्प
साथ छोड़ जाता नहीं
सुगंध देना है कर्म उसका
धर्म छोड़ वो जाता नहीं
जीवन की धारा ऐसी बही है
ऐसे बहेगी जीवन की धारा।

पानी हो मंजिल तो आयेंगी मुश्किल
घबराना, व बच के जाना ठीक नहीं है
काँटों पे चलकर संघर्ष करना
मानव स्वभाव का है हिस्सा
हिम्मत कर जान लो
नामुमकिन जीवन में कुछ भी नहीं
जीवन की धारा ऐसे बही है
ऐसे बहेगी जीवन की धारा।

सूरज उगा है पूरब से
पश्चिम में डूबेगा, सबको पता है
संबंधों में है स्वार्थ कितना
न उनको पता है, न हमको पता है
इसके लिए न आँसू बहाना
न आँसू बहाना, न ये मोती लुटाना
इनकी कीमत न सबको जताना
ये तुमको बताते रहेंगे, जीवन का अनुभव सुनाते रहेंगे
कि ऐसी बही है
ऐसे बहेगी जीवन की धारा।

नवकृति मानव और संस्कृति

साक्षी राजावत, कक्षा 12
केंद्रीय विद्यालय क्र. 1, ग्वालियर



सृजनात्मक प्रक्रिया मानवीय जीवन का एक अभिन्न अंग है। ठीक उसी प्रकार सृष्टि के निर्माण के लिए भी सृजनात्मक प्रक्रिया विशेष है, जिस तरह एक शिशु जब जिंदगी की अवहेलनाओं से मुक्त होकर जमीन पर अपने कदम रखता है, उसकी अभिव्यक्ति गिरने और संभलने में दिख जाती है। वह उस शिशु के जीवन की सृजनात्मक प्रक्रिया है किंतु वक्त के बंधन को पार करते हुए जब वह शिशु बिना लड़खड़ाए और गिरते हुए चलना सीख जाता है, तब उसके परिजन और समाज की यह जिम्मेदारी बनती है कि उसे अपनी संस्कृति और संस्कारों से जोड़कर रखें, परंतु पश्चिमी संस्कृति के कारण आजकल की युवा पीढ़ी अपने संस्कारों को भूलती जा रही है और इंसानियत और संस्कृति खत्म हो रही है।

नवकृति उस मानवीय विचार को संरक्षित करने का प्रयास है अर्थात् अगर हमें संस्कृति बचानी है तो उससे पहले हमें इंसानियत बचानी है। पश्चिमी संस्कृति हमें आत्मविश्वासी बनाती है, खुद पर विश्वास करना सिखाती है परंतु वह आत्मविश्वास अगर आत्मघाती बन जाए तो वह इंसान को जड़ से मिटाकर उसे अंदर से खोखला कर सकता है अर्थात् प्रलय का संदेश देता है।

चित्र में दर्शाया गया गजानन और घंटी हमारी संस्कृति को दर्शाती है और चार बच्चे चार वेदों को दर्शाते हैं और उनमें नीला रंग पश्चिमी संस्कृति और माथे पर रंगा सूरज की किरणों जैसा रंग वह

इंसानियत और विचारधारा है जिसे संरक्षित करने की आवश्यकता है।



कला सृजन वह धर्म है, जिनसे उपजे वेद।
कला सृजन की मौत पर जुग-जुग कर है खेद।।

ग्वालियर में मौसम का हाल

जयदीप शर्मा

वैज्ञानिक सहायक
मौसम कार्यालय, ग्वालियर



यहाँ के मौसम की मार,
झेल रहा हर लाल,
बारिश के मौसम में,
उमस किए हुए है बेहाल,

सर्दी तो यहाँ की,
कंपाये हर हाल,
गर्मी के मौसम में,
ये झुलसाये बेमिसाल,

किसान की है मेघों से पुकार,
अब तो बरसो नहीं तो हो जायेंगे कंगाल,

सर्दी में दो तीन तक गिरता मध्यसार,
गर्मी में पारा चढ़ता अढ़तालीस हर साल,

पत्रकारों के सवाल खींचते हैं खाल,
पूछते हैं क्या रहेगा मौसम का हाल,

मौसम वैज्ञानिकों के अनुमानों की,
गलती नहीं यहाँ दाल,

यहाँ के मौसम की मार,
झेल रहा हर लाल।



आत्मनिर्भर भारत का पर्यटन परिप्रेक्ष्य : एक अवलोकन

अमित तिवारी

सहायक प्राध्यापक

भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान, ग्वालियर



बदले हुए वैश्विक परिदृश्य में उद्धत होते हुए अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की विवेचना करने पर ज्ञात होता है कि बीता वर्ष अनेकानेक कारणों से अलग रहा है। इस अलगाव का समीचीन कारण कोरोना और कोरोना जनित अंतर्राष्ट्रीय स्थितियाँ जिनमें वैश्विक लॉकडाउन की स्थिति और 12 मार्च 2020 से विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोना को वैश्विक महामारी का दर्जा दिया जाना रहा है। इस विकराल विशेष स्थिति से संपूर्ण विश्व और उसका अर्थतंत्र प्रभावित हुआ है, जिसमें जानमाल की हानि को फौरी तौर पर कमतर या न्यूनतम करने के लिए सामाजिक दूरी बनाए रखने और वृहत्तर समय के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय अलगाव (दूरी) रखने की दीर्घ अवधि नीति निश्चित तौर पर वैश्विक व्यापार खासतौर पर अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन (लोगों की आवाजाही) पूर्णतः बंद है। इस दुविधाजनक स्थिति में जनमानस और पर्यटन हितधारकों की आर्थिक स्थिति बहुत हद तक प्रभावित हुई है। बीते एक वर्ष से अधिक समय के व्यापारिक नियोज्यों को आंकलित करने पर पता चलता है कि सब कुछ एक बेहद बुरे सपने की तरह रहा है। इसमें रिकार्ड समय तक के लिए अंतर्राष्ट्रीय 'पर्यटन शून्य' रहना, पर्यटन मानचित्र पर किसी बड़ी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मंदी से अधिक व्यापक और प्रभावी रहा है। इसके नकारात्मक प्रभाव का आंकलन यू.एन.डब्ल्यू.टी.ओ. जैसी संस्थाएं इस रूप में करती हैं - 100 अरब डॉलर से अधिक व्यापार घाटा, 120 मिलियन लोगों की वैश्विक रोजगार की तात्कालिक क्षति, लाखों डॉलर के निवेश का अधर में लटकना, निवेश आधारित पर्यटन निकायों का डूबना या दिवालिया होना एवं

आंकलन से परे तात्कालिक व्यवसायिक हानि। इन सबका वर्तमान पर्यटन परिप्रेक्ष्य में अगर कोई हल है तो वह यकीनन इन हालातों के मद्दे नजर आत्मनिर्भरता का ही है।

मगर 'आत्मनिर्भरता या आत्मनिर्भर भारत' क्या है ? और माननीय प्रधानमंत्री द्वारा इसे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ही क्यों प्रचारित किया गया ? इस सोच को समझने और विश्लेषित करने की आवश्यकता है। जैसा यू.एन. डब्ल्यू.टी.ओ. के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन गहरे संकट के दौर में है। अतः समय और नेतृत्व की दूरदर्शिता, महती पर्यटन प्रकल्पों को देशी आधार पर बुनने, गढ़ने और भुनाने की व्यापक सोच है। साक्ष्यों से स्पष्ट है कि पर्यटन मंत्रालय द्वारा भी वर्ष 2020 के प्रारंभ से ही उनकी नेतृत्व की कुशलता और दूरदर्शिता के कारण ही 'देखो अपना देश' जैसी विशुद्ध आत्मनिर्भरतापूर्ण पर्यटन स्कीम को लागू करना एक समीचीन राष्ट्रीय पर्यटन नीति की दूरदर्शिता थी। आज के बदले हुए परिदृश्य में देश पर्यटन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होकर, घरेलू पर्यटन (राष्ट्रीय पर्यटन) बाजार को भुना और बढ़ा रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन समुदाय की एक बड़ी मांग कोरोना वैक्सीनेशन को भी भारतीय वैज्ञानिकों एवं तकनीकविदों की कर्मठता ने संभव बना दिया है। आज देश में दो विशुद्ध भारतीय वैक्सीन विकसित हो चुकी हैं और आत्मनिर्भरता की भावना से प्रेरित भारत वैश्विक स्तर पर विश्व के लगभग 68 देशों की वैक्सीन मांग की पूर्ति कर चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं आई.एम.एफ. समेत अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने भारत के इस कार्य की सराहना की है एवं व्यापक अंतर्राष्ट्रीय हितों में भारत के

सकारात्मक रवैये को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर मान्यता भी मिली है। गत वर्ष सितम्बर से भारत ने आत्मनिर्भर पर्यटन के क्षेत्र में व्यापक गतिविधियों को प्रश्रय दिया है जिसमें निम्नांकित महत्वपूर्ण गतिविधियाँ इस प्रकार हैं—

1. पूर्वोत्तर भारत आधारित पर्यटन पर जोर,
2. श्रीराम जन्म भूमि एवं राम वनगमन आधारित पर्यटन परिप्रेक्ष्यों का नवीनीकरण,
3. प्रसाद एवं हृदय स्कीम आधारित आध्यात्मिक पर्यटन केंद्रों पर विशेष जोर,
4. आर्थिक जोन्स को पर्यटन सर्किट से जोड़ना,
5. ग्राम, गौ एवं ग्रामीण पर्यटन पर विशेष जोर,
6. आध्यात्मिक पर्यटन केंद्रित उत्सवों पर जोर,
7. साहसिक पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देकर युवाओं को जोड़ना आदि।

भारतीय राष्ट्रीय पर्यटन इस कोरोना काल में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तनों से स्वयं को समृद्ध कर रहा है इस परिप्रेक्ष्य में व्यापक स्तर पर कुछ मूलभूत कार्य केंद्र सरकार द्वारा किए गए हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं —

1. केवड़िया गुजरात में दुनिया की सबसे ऊंची मूर्ति “स्टेच्यू ऑफ यूनिटी” की स्थापना।
2. गुजरात में पहले “सी प्लेन” की आधारशिला।
3. राष्ट्र नायकों और उनसे संबंधित स्थलों को नवीनता के साथ राष्ट्रीय पर्यटन परिपाटी पर जोड़ना जिनमें नेताजी सुभाषचंद्र बोस से संबंधित स्थलों, स्मारकों आदि को महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों के तौर पर बदलने की कार्य योजना।
4. मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम एवं उनके जीवन क्रम में घटित महत्वपूर्ण घटनाओं एवं

स्थलों को पर्यटन मानचित्र में शामिल करना।

5. अयोध्या को एक व्यापक अंतर्राष्ट्रीय स्तर के तीर्थ स्थल के तौर पर विकसित करने की कार्य योजना।
6. स्मारक आधारित पर्यटन पर अच्छे अनुभव के लिए युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण हेतु ऑनलाइन पाठ्यक्रम आई.आई.टी.टी.एफ.सी. का सूत्रपात।
7. पर्यटन आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों के लिए विशेष सब्सिडी योजनाएं आदि।

भारत की अर्थव्यवस्था पर्यटन क्षेत्र से लगभग 8% वार्षिक का सकल घरेलू उत्पाद प्राप्त करती आई थी। बदले हुए आर्थिक परिदृश्यों में यह आंकड़ा अपने न्यूनतम स्तर 3% तक आ गया। संतोष की बात है कि हमारे बदले दृष्टिकोण से आज हम इस क्षेत्र में अपने 8% के स्तर को पुनः प्राप्त करने के रास्ते पर हैं। वैश्विक महामारी का दौर यूं तो उथल पुथल का होता है और स्वभाविक तौर पर इसका असर राष्ट्रीय स्तर पर अनेक क्षेत्रों में होता है, इन सबको सहते हुए भी भारतीय पर्यटन क्षेत्र ने अपने आप को न केवल संयमित रखा अपितु, न्यू नार्मल के लिए स्वयं को ढाला और विकसित भी किया। इस परिप्रेक्ष्य में यह दौर रचनात्मकता को विकसित करने, योजनाओं को बनाने, मानव संसाधन को परिष्कृत करने, भाषा और गंतव्य के विषय में सीखने, नवाचार करने, वर्चुअल प्लेटफार्म से स्वयं को अंतर्राष्ट्रीय जगत से जुड़े रखने, वेबिनार और संगोष्ठियों के माध्यम से दूर रहकर आभासी पर्यटन को जीने, पर्यटन के लिए नए विकल्पों को गढ़ने का एक व्यापक कार्य भारतीय पर्यटन क्षेत्र ने किया है वह आज भी टिका है, डटा है और आगामी पर्यटन मांगों के लिए आत्मनिर्भरता की कसौटी पर खरा रहते हुए वापसी की बेहतर अपेक्षा के साथ आत्मनिर्भर होकर स्वर्णिम भविष्य की व्यापक कल्पना में जुटा है।

कृषि का खाद्य व पोषण सुरक्षा में योगदान एवं वर्तमान परिस्थिति

डॉ. शिव प्रताप सिंह, मुरलीधर जे. सदावर्ती, सुभाष कटारे, वी.के. दुआ,
संजय रावल, मनोज कुमार, संजय कुमार शर्मा, श्याम कुमार गुप्ता,
वाई. पी. सिंह, आर. के. समाधिया और सुरेन्द्र सिंह

संबंध

1. भा. कृ. अनु. प. केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर, म.प्र.
2. भा. कृ. अनु. प. केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला, हि.प्र.
3. भा. कृ. अनु. प. केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र मोदीपुरम, मेरठ, उ.प्र.

संपर्क विवरण : ईमेल drshivpratapsingh@yahoo.co.in

मृदा की जुताई, फसल उगाने व पशु पालन करने की कला एवं विज्ञान को कृषि (एग्रीकल्चर) कहते हैं। इसमें पौधों व पशुओं के उत्पाद तैयार करना व उनका विपणन भी शामिल है। दुनिया की भोजन व रेशों की अधिकांश आवश्यकताओं की आपूर्ति कृषि से ही होती है।



परंपरागत कृषि



आधुनिक कृषि

सभी पदार्थ पाँच तत्वों से बने हैं जिन्हें पंचभूत कहते हैं इनमें पृथ्वी, जल, अग्नि, तेजसद्ध, वायु व आकाश सम्मिलित हैं। यदि कृषि बंद कर दी जाए तो पृथ्वी के संपूर्ण कृषि का क्षेत्र बहुत तेजी से अपने प्राकृतिक स्वरूप में वापस आ जाएगा जैसा कि वह 10,000 वर्ष पूर्व था। सभी प्रकार की वनस्पतियाँ एवं जीव जन्तुओं की संख्या व उनके प्रकार में आज की तुलना में काफी वृद्धि हो जाएगी। ये संख्या आज के उगाये जाने वाले पौधों व पालतू जानवरों से काफी ज्यादा होगी। लेकिन इससे 10 में से 9 मनुष्य नष्ट हो जाएंगे, क्योंकि इस सौंदर्य एवं शांति भरे उद्यान (गार्डन ऑफ इडेन) में साधारण शिकार, मछली पकड़ने एवं खाद्य इकट्ठा करके केवल 500 मिलियन लोगों का ही जीवन यापन संभव होगा। उद्योग भी अभी मानवता को खाद्य बनाकर पोषण करने में सक्षम नहीं है। कृषि के अलावा 10 मिलियन लोगों को खाद्य आपूर्ति करने का कोई और विकल्प नहीं है। अतः दुनिया की खाद्य सुरक्षा और अधिक पौधों व पालतू जानवरों को कृषि के अन्तर्गत समाहित करके खेती में विविधीकरण करने व जंगली प्रजातियों के संरक्षण पर निर्भर होगा। विकसित एवं अविकसित कृषि के अंतर्गत उत्पादकता में पिछले कुछ वर्षों में काफी अंतर आया है। 20वीं शताब्दी के शुरुआत में श्रमिक उत्पादकता विकसित व अविकसित कृषि में 1:10 थी जो आज बढ़कर 1:100 हो गई है जिसके कारण 21वीं शताब्दी में लगभग 10 मिलियन छोटे व मझोले कृषि फार्म खेती से बाहर हो गए हैं। विकासशील देशों में यदि सरकारें एक चौथाई फार्मों को भी आधुनिक कृषि उपकरणों से सुसज्जित करना चाहती हैं तो उन्हें कई विलियन डालर खर्च करने पड़ेंगे जो कि इन देशों की वार्षिक

आमदनी का कई गुना होंगे। अतः यह कार्य थोड़े समय में संभव नहीं है। यदि सरकारें किसी तरह यह कार्य करती भी हैं तो मशीनें लोगों को कृषि से निकालकर श्रम बाजार में भेज देगी जिससे श्रम बाजार में बेरोजगारों की संख्या दूनी हो जाएगी। 20वीं शताब्दी के शुरुआत में दुनिया की लगभग आधी आबादी गरीबी रेखा के नीचे थी जिसकी आमदनी दो अमेरिकी डालर प्रतिदिन से भी कम थी। लगभग 2 मिलियन लोग पोषक तत्वों की कमी से कुपोषित (लौह तत्व, आयोडीन, विटामिन ए, खनिज तत्व इत्यादि) थे। एक विलियन से ज्यादा लोगों को पेय जल (पोटेबिल जल) उपलब्ध नहीं था। लगभग 800 मिलियन लोग कुपोषित थे जिनके पास जरूरत के मुताबिक खाद्य सुरक्षा नहीं थी। 20वीं सदी के पिछले तीन दशकों में दुनिया की कुल जनसंख्या के कुपोषित लोगों का हिस्सा कम हुआ है लेकिन अल्पपोषित लोगों की संख्या में कोई कमी नहीं हुई। यहाँ पर यह ध्यान देने योग्य है कि तीन चौथाई कुपोषित लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। दुनिया के ज्यादातर भुखमरी के शिकार लोग शहरी उपभोक्ता और खाद्य खरीददार होने के बजाए उत्पादक किसान व कृषि उत्पादों के विक्रेता हैं। कृषि में सुधार, दुनिया के 80% गरीबों की जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं एवं मुख्य रूप से खेती करते हैं, गरीबी कम करने, आमदनी में सुधार करने व खाद्य सुरक्षा में अहम भूमिका निभा सकती है। अभी तक कृषि क्षेत्र ने दुनिया की बढ़ती फसल व पशु उत्पादों की मांग के हिसाब से वृद्धि की है। जहाँ वर्ष 1960 से वर्ष 2000 के बीच दुनिया की आबादी दो गुनी हो गई वहीं मानव पोषण में गुणात्मक वृद्धि हुई। दुनिया के प्रमुख खाद्यान्न धान, गेहूँ व मक्का (जो कि विश्व के प्रमुख भोजन हैं) के दामों में लगभग 60% की गिरावट आई है।

कृषि का विकास अति गरीबी दूर करने, संपत्तियों के साझा करने व 9.7 विलियन लोगों के वर्ष 2050 में पेट भरने का जबरदस्त औजार है। अन्य क्षेत्रों के विकास की तुलना में कृषि क्षेत्र का विकास होने पर अति गरीब लोगों की आमदनी बढ़ाना दो से चार गुना ज्यादा प्रभावी है। वर्ष 2016 का अध्ययन बताता है कि 65% गरीब युवाओं ने खेती से जीवन यापन प्राप्त किया। आर्थिक दृष्टि से भी कृषि महत्वपूर्ण है जिसने दुनिया की अर्थव्यवस्था में वर्ष 2018 में 4% जबकि कुछ विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था में इसका 25% तक योगदान रहा।

आज कृषि आधारित वृद्धि, गरीबी उन्मूलन एवं खाद्य सुरक्षा, मौसम बदलाव की वजह से खतरे में है। यह खतरा दुनिया के खाद्य असुरक्षित क्षेत्रों पर सर्वाधिक है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कृषि, जंगल व बदलते जमीन के उपयोग का योगदान 25% है।

वर्तमान खाद्य प्रणाली लोगों व धरती के लिए खतरा बन गई है। कृषि कुल जल के 70% हिस्से का उपयोग कर रही है। साथ ही अरक्षणीय (अन्सस्टेनेबल) स्तर का प्रदूषण व अपशिष्ट उत्पन्न कर रही है। पूरी दुनिया में कुल उत्पादित खाद्य का एक तिहाई हिस्सा या तो नष्ट हो जाता है या तो अपशिष्ट (बर्बाद) बन जाता है।

खाद्य सुरक्षा व पोषण सुरक्षा दोनों के लिए खाद्य को नष्ट होने से बचाना एक अहम भूमिका निभा सकता है। यह मौसम बदलाव को रोकने के साथ-साथ वातावरण के दुष्प्रभाव को भी रोकेगा। लाखों लोग या तो जरूरत से कम भोजन कर पा रहे हैं या गलत प्रकार का भोजन कर रहे हैं जो मानव स्वास्थ्य को काफी नुकसान पहुंचा रहा है। वर्ष 2020 की रिपोर्ट में पाया गया कि दुनिया के 690 मिलियन या 8.9% लोग भूखे रह जाते हैं जिनकी संख्या पिछले पाँच वर्षों में 60 मिलियन बढ़ गई है। खाद्य असुरक्षा आहार की गुणवत्ता और विभिन्न प्रकार के कुपोषण में वृद्धि कर सकती है। पूरी दुनिया के तीन विलियन से अधिक लोग स्वस्थ आहार के लिए खर्च करने में सक्षम नहीं हैं।

भारत में वर्ष 2018-19 के सर्वे के मुताबिक ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर निर्भरता में 50% की कमी आई है। साथ ही कृषि क्षेत्र का योगदान सकल घरेलू उत्पादन में वर्ष 1983-84 के 34% से घटकर वर्ष 2018-19 में 16% रह गया है। कृषि क्षेत्र का रोजगार में योगदान वर्ष 1983 में 81% था जो कि वर्ष 2018 में 58% रह गया। इसके उलट गैर कृषि क्षेत्र का रोजगार में इसी अवधि में योगदान 19% से बढ़कर 42% हो गया। वर्ष 1983 में कृषि क्षेत्र में पुरुष कामगारों की संख्या 78% थी जो कि वर्ष 2018 में 53% रह गई है। इसी प्रकार इस क्षेत्र में महिला कामगारों

की संख्या वर्ष 1983 के 88% से घटकर वर्ष 2018 में 71% रह गई है। (तालिका 1) गैर कृषि क्षेत्र में पुरुष कामगारों की संख्या वर्ष 1983 के 22% से बढ़कर 2018 में 47% हो गई। इसी प्रकार गैर कृषि क्षेत्र में महिलाओं की संख्या इसी अवधि में 12% से बढ़कर 29% हो गई। भारत में कृषि के अन्तर्गत क्षेत्रफल दुनिया में दूसरे नम्बर पर है। इसके साथ ही देश में विविध कृषि जलवायु क्षेत्र होने से अति उत्तम कृषि योग्य वातावरण है। भारत दुनिया में सर्वाधिक चाय, दूध, काजू, गेहूँ, फल, सब्जियाँ उत्पादित करने वाले देशों में सम्मिलित है। इन खूबियों के बावजूद देश का कृषि क्षेत्र रुग्ण है एवं कृषकों की आत्म हत्याएं जारी हैं। पिछले कई दशकों से किसानों की आमदनी में गिरावट जारी है और वे गरीबी में डूबते जा रहे हैं। इन सब कमियों के बावजूद देश की 50% जनता सीधे या परोक्ष रूप से जीवन यापन के लिए कृषि से जुड़ी है।

तालिका 1 : ग्रामीण कृषि रोजगार (%)

राज्य	पुरुष		महिला	
	1983	2018-19	1983	2018-19
आंध्र प्रदेश	77	50	83	74
असम	79	41	80	49
बिहार	81	52	88	76
गुजरात	79	64	92	83
हरियाणा	71	35	90	61
कर्नाटक	82	57	88	73
केरल	58	29	70	26
मध्य प्रदेश	87	68	94	80
महाराष्ट्र	80	64	93	84
उड़ीसा	78	47	81	60
पंजाब	77	38	92	42
राजस्थान	81	56	94	82
तमिलनाडु	69	38	82	51
उत्तर प्रदेश	79	58	90	81
पश्चिम बंगाल	73	50	75	45
भारत	78	53	88	71

डाटा : राष्ट्रीय नमूना सर्वे वर्ष 1983 एवं पी.एल.एफ.एस. वर्ष 2018-19

देश जब स्वतंत्र हुआ उस समय देश का प्राथमिक उद्देश्य खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना था। इसके तहत देश ने प्रयास किया कि हरित क्रांति के माध्यम से (जिसमें उन्नतशील बीजों व रसायनों के उपयोग आदि से) देश न केवल खाद्य सुरक्षित बना बल्कि एक कृषि निर्यातक देश के रूप में उभरा। लेकिन इन उपलब्धियों के बावजूद कृषकों की स्थिति दयनीय होती गई जिसको ध्यान में रखते हुए स्वामी नाथन (हरित क्रांति के प्रणेता) समिति गठित की गई। उन्होंने वर्ष 2006 में भूमि सुधार, पानी की मात्रा व गुणवत्ता, तकनीकी कमियों, कृषि ऋण इत्यादि के बारे में अपने सुझाव दिए।

कृषि में रोजगार की कमी आने से आज देश में वर्ष 1991 की तुलना में 15 मिलियन कम कृषक हैं। वर्ष 1990 के आर्थिक उदारीकरण के बाद कृषि क्षेत्र में कृषि का लाभांश कृषकों से निकलकर उद्यमियों एवं व्यवसायियों को चला गया। इसके बाद देश के कृषि उत्पाद निर्यात में वृद्धि हुई और भारत वर्ष 2012 में चावल का दुनिया में

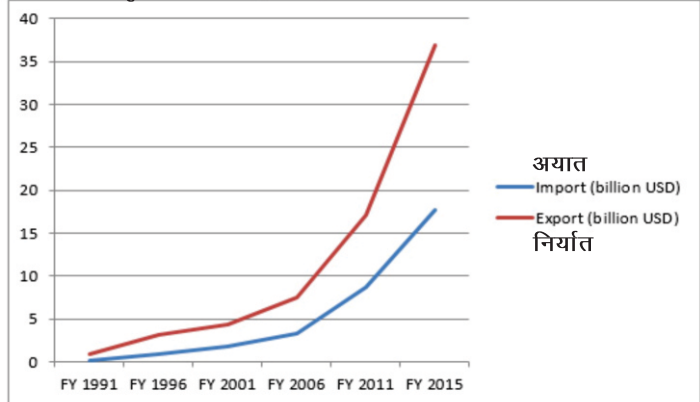
सबसे बड़ा निर्यातक देश बन गया। इस सफलता के बावजूद भी लाखों लोग खरीद क्षमता न होने की वजह से भूखे रह जाते हैं।

वर्ष 2024 तक भारत की जनसंख्या दुनिया में सर्वाधिक हो जाएगी और वर्ष 2050 तक 1.6 विलियन हो जाएगी। वर्तमान में देश की 1.28 विलियन जनसंख्या में से 360 मिलियन जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे रह रही है।

पिछले 11 वर्षों में कृषि उत्पादन वर्ष 2004-05 के 87 विलियन डालर से बढ़कर वर्ष 2015-16 में 322 विलियन डालर हो गया है। यह सकल घरेलू उत्पादन का 17% है। अतः यह क्षेत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। देश की अर्थव्यवस्था के उत्थान के लिए कृषि बहुत ही महत्वपूर्ण है जहां देश का सर्विस सेक्टर व उद्योग का स्थान विश्व में क्रमशः 11वें और 12वें नम्बर पर है वहीं कृषि का स्थान विश्व की कृषि में काफी ऊँचा है। देश की कृषि क्षेत्र में शुद्ध आय पूर्व के वर्षों में सेवा क्षेत्र के लगभग बराबर थी। वर्ष 2014 में कृषि क्षेत्र से शुद्ध निर्यात 16 विलियन डालर था जबकि वाणिज्यिक सेवा से 9 विलियन डालर था। दुनिया में खाद्य उत्पादन की माँग बढ़ रही है जबकि लोगों का कृषि क्षेत्र छोड़ना जारी है जिससे प्रश्न खड़ा हो रहा है कि खाद्य उत्पादन कौन करेगा? वर्ष 2016 में भारतीय कृषक की औसत आयु 50.1 वर्ष थी। इसमें से अधिकतम जमीन वाले कृषकों (33.7%) की उम्र 41-50 वर्ष थी, 32% कृषकों की औसत उम्र 51-60 वर्ष थी। कृषि ग्रेजुएट में से केवल 1.2% छात्र ही कृषि व्यवसाय को चुन रहे हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में प्रतिदिन 2000 कृषक खेती छोड़ रहे हैं। वर्ष 1970 में ग्रामीण परिवार की तीन चौथाई आमदनी कृषि से होती थी जबकि 45 वर्ष बाद वर्ष 2015 में यह एक तिहाई से भी कम हो गई।

केवल भारत में ही नहीं, दुनिया में कृषि क्षेत्र उम्र दराज लोगों के कंधों पर है क्योंकि युवाओं का इस क्षेत्र में आकर्षण घटा है। अमेरिका में कृषकों की औसत आयु 58 वर्ष जबकि जापान में यह 67 वर्ष है। यूरोप के हर तीसरे कृषक की उम्र 65 वर्ष है। भारत की तरह दुनिया के सभी देशों में कृषक खेती छोड़ रहे हैं। उदाहरण के लिए अगले 6-8 वर्षों में 40% कृषक खेती छोड़ देंगे। जापान सरकार 45 वर्ष से नीचे के युवाओं को कृषि क्षेत्र में आकर्षित करने का प्रयास कर रही है।

भारत के कृषि उत्पादन का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार



स्रोत : FAO and Tata strategic research)

वर्ष 2004-05 से कृषि गैर कृषि अर्थव्यवस्था में बदल गई है। किसान खेती छोड़कर गैर कृषि क्षेत्र की तरफ बढ़ रहे हैं। यह आर्थिक निर्णय है क्योंकि गैर कृषि क्षेत्र में कृषि क्षेत्र की तुलना में आमदनी बढ़ी है। एक कृषक की आमदनी गैर कृषक के पाँचवें हिस्से के बराबर हो रही है।

दशकों तक कृषि छोड़ने वालों को गैर कृषि क्षेत्र में काम देने के प्रयास किए गए। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बदलावों के बावजूद कृषि से बेरोजगार लोगों को गैर कृषि क्षेत्र माँग के अनुसार रोजगार प्रदान करने में असक्षम रहा है। इससे कृषि क्षेत्र को छोड़ने वाले लोगों को कृषि क्षेत्र के अलाभकारी होने पर भी उसी क्षेत्र में रहना पड़ रहा है। अनार्थिक स्थिति को कोई कब तक बर्दाश्त करे? वर्ष 2004-05 से 2011-12 में लगभग 34 मिलियन कृषक कृषि क्षेत्र से बाहर हो गये। इस प्रकार कृषि क्षेत्र से वार्षिक प्रस्थान करने वालों की दर 2.04% है।

बिन तेरे

मनजीत कुमार सिंह

एलएसी वायुसेना स्टेशन
महाराजपुर, ग्वालियर

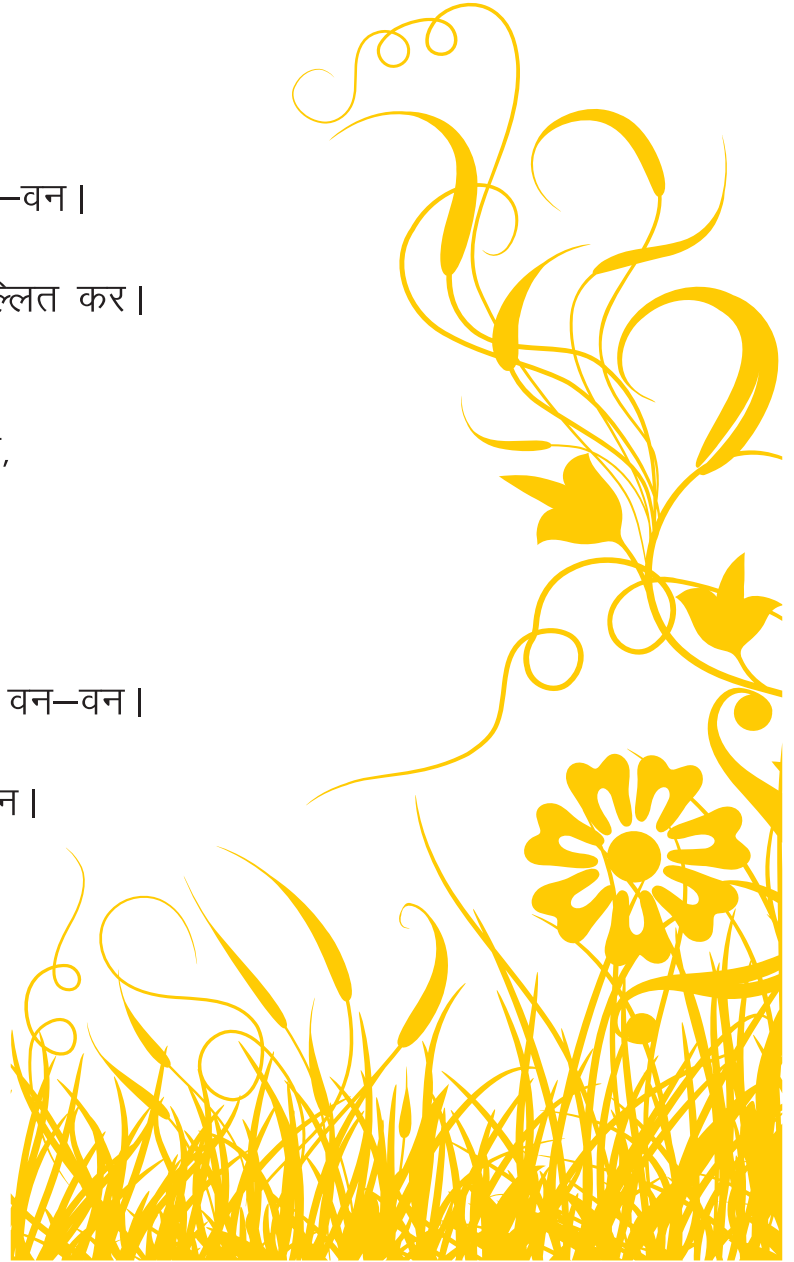
बिन तेरे,
सूना-सूना सा है यह जीवन,
बनकर रूह,
उतर तू मेरे इस जीवन में।

कस्तूरी की आस लिए,
फिरता है यह मन वन-वन।
बनकर सुगंध,
तू रोम-रोम अब प्रफुल्लित कर।

कोयल की कूक,
लगे है हूक, अब इस मधुवन को,
छेड़ राग तू मधुर,
बिखेर जा इस आँगन में।

प्रेम में तेरे,
भटका हूँ इस तरह मैं वन-वन।
निखरा है यह रूप,
ज्यों हो मंदिर का चंदन।

तू भी डूब,
कभी इस प्रेम सरिता में,
डूब के छू ले प्यार।
वर्षों से सूने इस जीवन को,
कुछ तो मिले करार।



पिता

अंशुल द्विवेदी

वैज्ञानिक सहायक,
मौसम कार्यालय, ग्वालियर

रख के वो खिलौना,
वापस चल दे,
नन्हें कदम वापस पलटे,
सोचें पापा कितने गंदे,
बिना खिलौने के क्यों चल दें,
यूं कुछ मम्मी कह गले लगाई,
आंसू पोंछे और कह आई,

देखो कल वो खिलौना लेते आना,
मेरे बच्चे को और न रुलाना,
रात गुजारी सोच वो खिलौना,
गूंजेगा कल कोना कोना,

सुबह तक खो गई वो यादें,
पापा फिर भी पूरे कर लाये वादे,
लगा कहानी यहीं खत्म थी,
पर वो बात माँ के ज़हन में थी,

माँ तो अपना बना सकती है,
बच्चे को अपना सब कुछ देकर,
वही जानती है कि पापा,
क्यों चुप हो जाते हैं सब देखकर,
नहीं दे पाते हैं सब अपना,
परिवार जो ये चलाना है,

शर्मिंदा कभी होना है किसी दुकान में,
पर किसी को ये नहीं बताना है,
खिलौना लेना है,
खाली जेब लेकर घर जाना है ...

एनसीसी ओटीए, ग्वालियर में वरिष्ठ स्कंध की एनओज के लिए 90 दिवसीय प्री-कमीशन कोर्स का संचालन

मोनिका जादौन

एनसीसी ओटीए



राष्ट्रीय कैडेट कोर विश्व में सबसे बड़ा स्वैच्छिक युवा बल है जिसमें 15 लाख से भी अधिक कैडेट्स हैं। कई अन्य राष्ट्रों ने एनसीसी से प्रेरित होकर समानांतर संगठन बनाने में बराबरी की है तथा एनसीसी में कैडेट एक्सचेंज प्रोग्राम के लिए नियमित कैडेट्स की उपस्थिति दी है। एनसीसी जैसे विशाल तथा अद्वितीय संगठन को सुचारु एवं प्रभावी ढंग से चलाना एक चुनौती भरा काम होता है जिसे सेना के नियमित सदस्यों तथा एनसीसी अफसर मिल कर अंजाम देते हैं।

अफसर प्रशिक्षण अकादमी, ग्वालियर संपूर्ण देश में एकमात्र ऐसा संस्थान है जो महिला अफसर सहायक एनसीसी अफसर तथा बालिका कैडेट्स अनुदेशक को प्रशिक्षित करती है। इस अकादमी में दिए गए प्रशिक्षण का उद्देश्य एनसीसी अफसर को वे आवश्यक कुशलताएं प्रदान करना है जिनके द्वारा वे एनसीसी कैडेट्स को राष्ट्र के जिम्मेदार, अनुशासित तथा कुशल नागरिक बना सकें।

एनसीसी ओटीए ग्वालियर में दिनांक 14 सितम्बर 2020 से प्री-कमीशन कोर्स प्रारंभ हुआ जिसमें संपूर्ण देश के विभिन्न निदेशालयों से 56 सीनियर विंग की केयर टेकर आफिसर उपस्थित हुईं। कोरोना महामारी को देखते हुए ओटीए ग्वालियर ने अपनी ट्रेनिंग पद्धति में बदलाव किए जिसके अंतर्गत कोर्स के प्रारंभिक 14 दिनों में सभी प्रशिक्षकों को कोर्स के प्रथम चरण नॉन कॉन्टेक्ट फेज (क्वॉरंटाइन) में रखा गया जिसके दौरान उन्हें निर्धारित पाठ्यक्रम को पूर्ण करवाया गया। 14 दिनों के क्वॉरंटाइन अवधि के पश्चात उनके संपूर्ण मेडिकल जांच के बाद प्रशिक्षुओं की कॉन्टेक्ट फेज की प्रशिक्षण गतिविधियां संचालित की गईं।

इन सभी प्रशिक्षुओं को ड्रिल, शारीरिक प्रशिक्षण, मैप रीडिंग तथा फायरिंग का अभ्यास करवाया गया। प्रारंभिक रूप में इन्हें सामान्य पीटी तथा ड्रिल करवाई गई। उसके बाद प्रशिक्षकों की प्रतिरक्षा शक्ति (इम्युनिटी) बढ़ाने के लिए उन्हें योगा के अभ्यास पर अधिक जोर दिया गया। इसके लिए आर्मी के कुशल प्रशिक्षकों के अलावा ग्वालियर के प्रतिष्ठित संस्थान लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान (एलएनआईपीई) से कुशल प्रशिक्षकों को आमंत्रित किया गया जो इन प्रशिक्षुओं को योगा के उपयोग और प्रशिक्षण के पश्चात् अपने-अपने शिक्षा संस्थानों में एनसीसी कैडेट के लिए प्रशिक्षण चलाने योग्य बनाते हैं।

आउटडोर प्रशिक्षण के लिए मैप रीडिंग एक्सरसाइज के लिये सभी प्रशिक्षुओं को नैनागढ़, नौगांव ले जाया गया। इसी के तहत आगे की मैप रीडिंग एक्सरसाइज के लिये इन्हें ग्वालियर किले पर ले जाया गया ताकि वे जमीन पर वास्तविक नक्शे को समझ सकें और इसका इस्तेमाल एक सक्षम अधिकारी के तौर पर कर सकें। प्रशिक्षुओं के बीच खेल-कूद की भावना को बढ़ाने के लिये इंटर कंपनी टेबल टेनिस और

इंटर कंपनी थ्रो बॉल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जो फिट इंडिया के मिशन को आगे बढ़ाएगा।

युद्ध कौशल और मैप रीडिंग सेना का एक महत्वपूर्ण अंश है जिसके लिए इन प्रशिक्षुओं को तैयार किया गया। हथियार का प्रशिक्षण, उसका कारगर इस्तेमाल और उसके रखरखाव के प्रशिक्षण के बाद इन प्रशिक्षुओं को पोइंट 22 की फायरिंग अभ्यास कराया गया।

प्रशिक्षुओं को फौजी ज्ञान के अलावा सेहत, फिटनेस, मानसिक तनाव और उनसे निपटने के तरीकों के बारे में जानकारी के लिए ग्वालियर में स्थित विभिन्न संस्थानों के योग्य प्रोफेसरों एवं फैकल्टी को अतिथि वक्ताओं के तौर पर बुलाया गया ताकि उनके ज्ञान का योगदान इन प्रशिक्षकों के लिए सुचारु रूप से किया जा सके।

कोर्स के दौरान निम्नलिखित मुख्य गतिविधियां संचालित की गई :-

एनसीसी प्रशिक्षार्थियों ने प्रदर्शित की – भारतीय सांस्कृतिक धरोहर

भारत में विभिन्न संस्कृति होते हुए भी हमारी प्राचीन सभ्यता हम सभी को एकता के सूत्र में बांधे हुए है। राष्ट्रीय कैडेट कोर विश्व की एक प्रधान वर्दीधारी युवा संगठन है जो अपने आदर्श “एकता एवं अनुशासन” द्वारा देश की विविधताओं को एकता की ओर अग्रसर करता है। एनसीसी संगठन को अनुशासन, उनके प्रशिक्षण द्वारा तथा एकता, सांस्कृतिक एकीकरण द्वारा प्राप्त होती है।

एनसीसी ओटीए, ग्वालियर में प्रशिक्षण प्राप्त करने आए प्रशिक्षु भारत के प्रत्येक राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, ऐसे में ओटीए, ग्वालियर एक लघु भारत का रूप ले लेता है।

दिनांक 21 नवंबर 2020 को एनसीसी अफसर प्रशिक्षण अकादमी में सांस्कृतिक संध्या **राष्ट्रीय एकीकरण जागरूकता कार्यक्रम** का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ओटीए के कमांडेंट, ब्रिगेडियर रनदीप सिंह डडवाल थे।

राष्ट्रीय एकीकरण जागरूकता कार्यक्रम की संध्या का प्रारंभ एक विशेष राज्य की भौगोलिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्वरूपों को दर्शाते हुए कार्यक्रम प्रस्तुति द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम की संध्या के शीर्षक के रूप में दो राज्यों उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश का चयन किया गया। देश के कोने-कोने से आए प्रशिक्षुओं ने उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश राज्यों की संपन्न संस्कृति को मनोरंजक तथा शैक्षणिक माध्यम से प्रस्तुत करके मंच को जीवंत कर दिया।

इस संध्या का शुभारंभ **देव वंदन** से किया गया। कार्यक्रम को सुशोभित करते हुए प्रशिक्षुओं द्वारा मध्य प्रदेश के विभिन्न प्रांतों के लोक नृत्य जैसे मालवा, बुंदेलखण्ड का राई एवं बघाई नृत्य और ग्वालियर का अहीरी नृत्य प्रस्तुत किया गया। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश की संस्कृति को दर्शाते हुए विभिन्न लोकगीतों की प्रस्तुति के साथ कजरी नृत्य प्रस्तुत किया गया जो कि बेहद मनमोहक था।



कोर्स के अंतिम चरण में सभी प्रशिक्षार्थियों को कैंप संबंधित प्रशिक्षण दिया गया जिसके तहत इन्हें तिघरा डेम ले जाकर तथा अकादमी में एक्सरसाइज शक्ति संचालित कर प्रशिक्षण प्रदान किया जिसमें इन्होंने अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन किया।

एनसीसी ओटीए, ग्वालियर में दिनांक 10 एवं 11 नवंबर 2020 को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया गया जिसके अंतर्गत आपदा प्रबंधन संस्थान, भोपाल से दो अधिकारीगणों तथा एस.डी.ई. आर.एफ., ग्वालियर के सदस्यों द्वारा इस दो दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान व्याख्यान, प्रदर्शन एवं आपदा प्रबंधन के दौरान प्रयोग किये जाने वाले उपकरणों की प्रदर्शनी लगाई गई जो कि कोर्स के प्रशिक्षार्थियों के लिए लाभप्रद रही।

इनके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के खेलों की प्रतियोगिताओं तथा विभिन्न व्यायामों में भाग लेकर अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन किया।



एनसीसी प्रशिक्षार्थियों ने प्रदर्शित की – भारतीय सांस्कृतिक धरोहर ‘झंकार’

कोर्स के अंतिम चरण में दिनांक 05 दिसंबर 2020 को एनसीसी अफसर प्रशिक्षण अकादमी में सांस्कृतिक संध्या ‘झंकार’ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ओटीए के कमांडेंट ब्रिगेडियर रनदीप सिंह डडवाल, विशिष्ट सेवा मेडल थे।

सांस्कृतिक संध्या ‘झंकार’ का प्रारंभ भारत के राज्यों के सांस्कृतिक स्वरूपों को दर्शाते हुए कार्यक्रम प्रस्तुति द्वारा किया गया। देश के कोने-कोने से आई प्रशिक्षुओं ने राज्यों की संपन्न संस्कृति को मनोरंजक तथा शैक्षणिक माध्यम से प्रस्तुत करके मंच को जीवंत कर दिया।

इस संध्या का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन व गणेश वंदना से किया गया। कार्यक्रम के अगले चरण में महाराष्ट्र का धनगर नृत्य, गुजरात का गरबा नृत्य, राजस्थान का लोकनृत्य कालबेलिया, पंजाब का गिद्धा एवं कर्नाटक के लोकनृत्य प्रस्तुत किए गए। इसके अतिरिक्त सूफी समूह गीत, कवि सम्मेलन एवं शिक्षा व्यवस्था पर आधारित नाटक का मंचन किया गया।

दीक्षांत परेड

दिनांक 12 दिसंबर 2020 को राष्ट्रीय कैडेट कोर अफसर प्रशिक्षण अकादमी, ग्वालियर के ऐतिहासिक तथा गौरवशाली परिसर में 51 वरिष्ठ वर्ग महिला एएनओज को भव्य दीक्षांत परेड में रैंक प्रदान किए गए। एएनओज सैन्य संस्थान तथा विभिन्न विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के बीच की आवश्यक कड़ी होती है। इस अकादमी में भारत के विभिन्न राज्यों से आई कुल 51 प्रशिक्षार्थियों ने तीन महीनों का कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया जिसमें विभिन्न प्रकार के सेना प्रशिक्षण जिसमें बेसिक सैन्य प्रशिक्षण, व्यक्तित्व विकास, उपदेशक कौशल तथा एनसीसी विषय का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

अफसर प्रशिक्षण अकादमी, ग्वालियर संपूर्ण देश में एकमात्र ऐसा संस्थान है जहां महिला अफसर सहायक एनसीसी अफसर तथा बालिका कैडेट्स अनुदेशक का प्रशिक्षण होता है। इस अकादमी में दिए गए प्रशिक्षण का उद्देश्य एनसीसी अफसर को वे आवश्यक कुशलताएं प्रदान करता है, जिनके द्वारा वे एनसीसी कैडेट्स को राष्ट्र के जिम्मेदार तथा भावी नागरिक बना सकें।

ब्रिगेडियर रनदीप सिंह डडवाल, विशिष्ट सेवा कमांडेंट, एनसीसी ओटीए, ग्वालियर ने इस शुभ अवसर पर दीक्षांत परेड की समीक्षा की। अपने आनुष्ठानिक साजसज्जा से परिपूर्ण प्रशिक्षार्थियों ने प्रभावशाली रूप से निरीक्षक महोदय के समक्ष “गार्ड ऑफ ऑनर” प्रस्तुत किया। समीक्षा अधिकारी ने प्रशिक्षार्थियों को उनके कमीशन प्राप्त करने पर बधाइयां दीं तथा अपने काम को समर्पण के साथ करने के लिए तथा राष्ट्र के युवा तथा भावी नेता के रूप में अपने कर्तव्यों की पूर्ति करने के लिए प्रोत्साहित किया। कोविड प्रोटोकॉल के कारण इस दीक्षांत परेड में किसी भी अतिथि को आमंत्रित नहीं किया गया। अतः अकादमी के सभी अधिकारियों एवं उनके परिवारजनों ने पिंपिंग की।

कमीशन प्रदान किए जाने के पश्चात् इन महिला एनसीसी अधिकारियों को राष्ट्रीय ध्वज के समक्ष शपथ दिलवाई गई जिसके तहत सभी प्रशिक्षार्थियों ने एनसीसी नियमों पर अमल करने की शपथ ली।

प्रशिक्षार्थियों को प्रदान किए गए पुरस्कार निम्न प्रकार हैं :-

- (क) चैम्पियनशिप बैनर “ब्रेवो” कंपनी को प्रदान किया गया जिसे महाराष्ट्र निदेशालय की केयर टेकर ऑफिसर सुनेत्रा एल धीरे ने प्राप्त किया।
- (ख) दीक्षांत परेड को कमान करने के लिए कमांडेंट का स्वर्ण पदक पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं चंडीगढ़ निदेशालय की केयर टेकर ऑफिसर अनिता राज को प्रदान किया गया।
- (ग) वरिष्ठ स्कन्ध की मेरिट क्रम में प्रथम होने पर एनसीसी महानिदेशक का “प्लेक ऑफ ऑनर” एवं कमांडेंट का स्वर्ण पदक, अकादमी विषयों में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी के लिए शर्मा कप एवं कोर्स में सर्वश्रेष्ठ एएनओ होने के लिए एनसीसी महानिदेशक ट्रॉफी देहली निदेशालय की सुपर्णा जैन ठाकुर को प्रदान किया गया।
- (घ) कोर्स की लीडरशिप ट्रॉफी पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं चंडीगढ़ निदेशालय की वीरपाल कौर को प्रदान की गई।



दीक्षांत परेड में एनसीसी ओटीए ग्वालियर के पदांकित कमांडेंट आर एस डडवाल, कमांडेंट के साथ अकादमी के उप कमांडेंट महोदय कर्नल करनैल सिंह, ले. कर्नल विशाल सिंह, प्रशिक्षण अधिकारी (समन्वय), ले. कर्नल सुधीर परमार, प्रशिक्षण अधिकारी भी उपस्थित थे।

मेरा आत्मनिर्भर भारत

सागर चौधरी (शोधार्थी)

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान, ग्वालियर



“आत्मनिर्भर हम, कहो वंदे मातरम्” आत्म निर्भरता हमेशा से ही एक निर्भीक तथा खुद पर निर्भरता का एक सूचक है। भारत हमेशा एक आत्मनिर्भर देश रहा है। भारत एक ग्रामीण प्रधान देश है, और ग्रामीण ज्यादातर आत्मनिर्भरता का सूचक होता है। आत्मनिर्भर भारत बनाने में न केवल व्यक्ति, समाज, गाँव और शहर अपितु भाषा (“हिंदी”) भी अपने आप में प्रबल दावेदार है।

ऐसे तो देखा जाये तो भारत को आत्मनिर्भर बनाने में भारत के कण-कण का योगदान है जिसमें कृषक, मजदूर, कामगार, उद्योगों, तथा ऐसे कई श्रेणियों के व्यक्ति और समाज का योगदान है। भारत एक कृषि प्रधान देश है, और कृषक सबसे बड़ा उदाहरण है भारत को आत्मनिर्भर बनाने में, क्योंकि कृषक अपने आस-पास की वस्तुओं तथा संसाधनों का उपयोगकर्ता तथा निर्माता भी है। आत्मनिर्भर भारत का एक मतलब ये भी है कि, हम खुद निर्माता बनें, उपयोग करें, विक्रय करें तथा आसपास की तलाश से ही आत्मनिर्भर बन जायें। भारत अब इस आत्मनिर्भरता की ओर निकल पड़ा है और हम ये सब

कुछ बीते वर्षों से देख भी रहे हैं।

आज भारत भाषा, कुटीर— मध्यम उद्योग, कृषि और ऐसे कई संसाधनों के बलबूते पर आत्मनिर्भरता की सीढ़ी चढ़ रहा है। यदि हम भारत की बात करें तो वह राष्ट्र भाषा, राजकीय भाषा और बोलियों के बल पर भी आत्मनिर्भर बन रहा है। हमारे देश की सैकड़ों बोलियों की वजह से भी आज हमारा समाज आत्मनिर्भरता से खड़ा है। आत्मनिर्भर बनने की एक वजह यह भी है कि पिछले कुछ महीनों में एक विश्व व्यापी बीमारी हमारे देश में भी आई है और आर्थिक मंदी लाई है, जिसने छोटे व्यापार और कुटीर उद्योग को भी हिला दिया, परिणामस्वरूप हमें खुद ही खड़ा होना पड़ा। अब हमें इन उद्योगों को पटरी पर लाने के लिए खुद को ही सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना होगा।

अतः हम कह सकते हैं कि भारत की विशाल विरासत, ज्ञान, कौशल और विश्व— द्वितीय— जनसंख्या के बलबूते पर हम आत्मनिर्भर बन के ही रहेंगे।



...जो बलात्कारी हैं

मनजीत कुमार सिंह

एलएसी वायुसेना स्टेशन
महाराजपुर, ग्वालियर

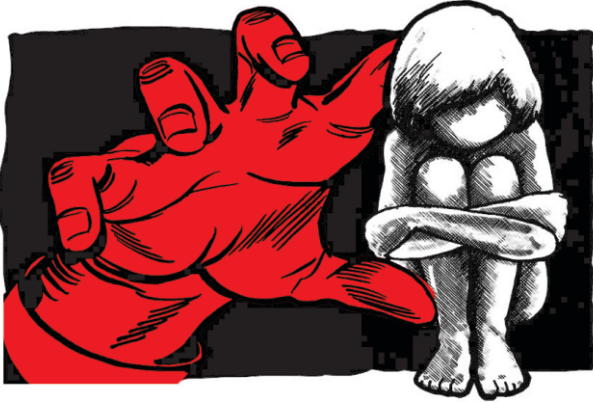


मर गयी बुद्धि, मर गया विवेक,
आँखें खोलो, तुम खुद लो देख।
बातें छोटी पर अर्थ बड़े भारी हैं,
चौराहे पर दो फाँसी जो बलात्कारी हैं।

यह बात गाँव-शहर गली-गली है,
हवस की कैसी ये हवा चली है।
कैसी ये अलबेली पहली है,
अनजान बन बैठे अधिकारी हैं।

यह बात सभी प्रदेश की है,
हर बेटी हमारे देश की है।
यह बात नहीं उपदेश की है,
यहां हर लोग खड़े बेविचारी हैं।

खेत-बगीचा चीख रहा है,
चारों तरफ यह दीख रहा है।
मीडिया भी यहां बिक रहा है,
बिटिया संग रोती यहाँ झाड़ी हैं।



वीरांगनाओं का यहां क्या कहना,
बेटी है यारो देश का गहना।
अब हमें नहीं है चुप रहना,
बहन आग लगा, तू तो चिंगारी है।

जिस चिंगारी ने चिता जलाई,
हिसाब मांगो तुम पाई-पाई।
बदला लेने की अब रूत है आयी,
तू रण चण्डी, ना कभी हारी है।

चूड़ी के संग तुम रखो चाकू,
फूलन बाई के भाँति डाकू,
हवसी देख भाग खड़े हो अबाकू,
अब नारी-नारी नहीं, तू तो कटारी है।
चौराहे पर दे दो फाँसी जो बलात्कारी हैं।।

इसे बचाएं

पूरन लाल

प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय क्र.5,
शास्त्री नगर, ग्वालियर



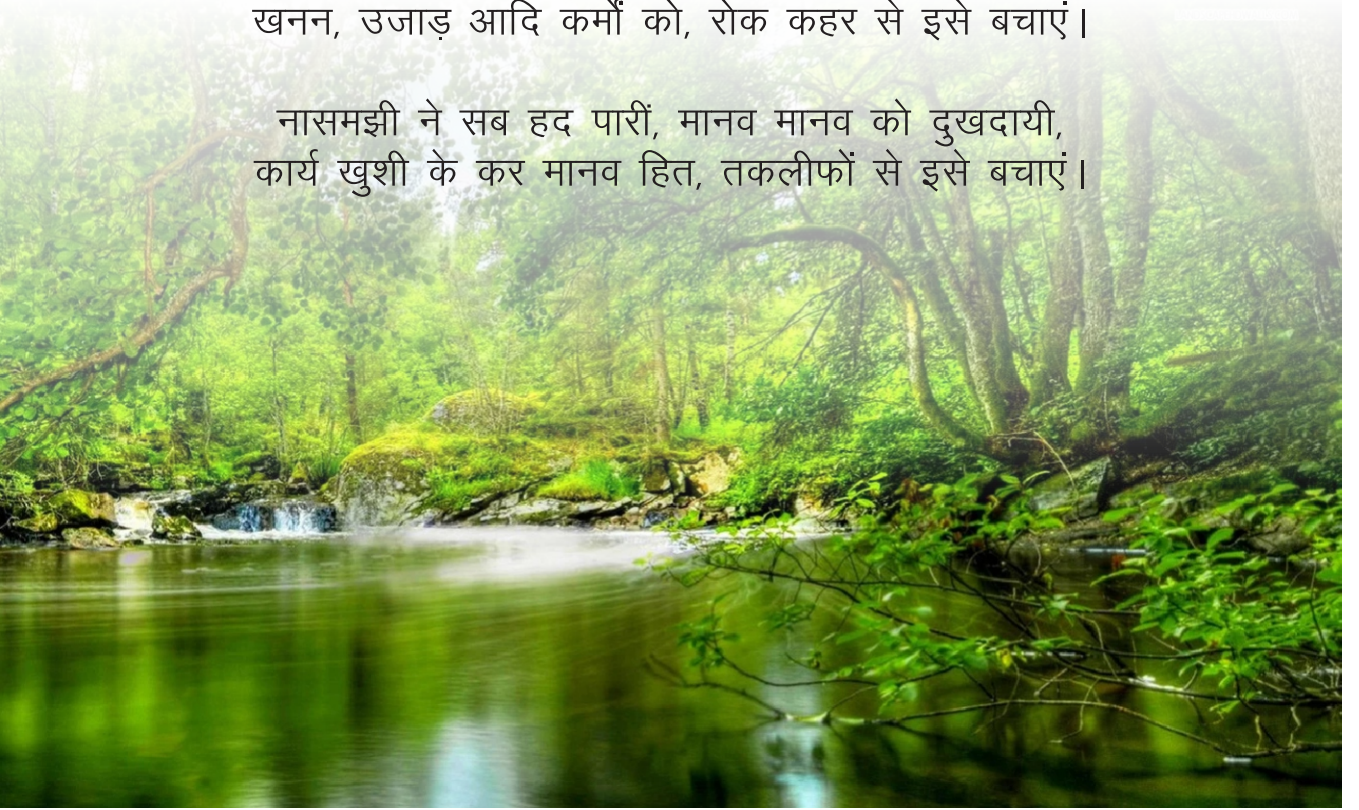
शीतल शुद्ध सुगंधित मोहक, हवा भोर की जीवनदायी,
रोकें काम प्रदूषण वाले, दूषित होने से इसे बचाएं।

शीतल मीठा शुद्ध पेयजल है धरती का रसदायी,
छोड़ें कर्म प्रदूषण वाले, दूषित होने से इन्हें बचाएं।

सुंदरता सुगंध बिखराते, झल-झल प्रसून सुखदायी,
थाम प्रदूषण की गतिविधियाँ, मुरझाने से इसे बचाएं।

धरणी का सिर श्वेत सुसज्जित, पर्वत शिखर छटा मनभायी,
खनन, उजाड़ आदि कर्मों को, रोक कहर से इसे बचाएं।

नासमझी ने सब हद पारीं, मानव मानव को दुखदायी,
कार्य खुशी के कर मानव हित, तकलीफों से इसे बचाएं।



स्वच्छ भारत-बापू का सपना

स्वर्णलता गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) म.प्र., ग्वालियर



स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है, जिसका उद्देश्य लोगों को स्वच्छता का पाठ पढ़ाना है ताकि लोग अपने आस-पास के परिवेश को, गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ-सुथरा करना और स्वास्थ्य के लिए हितकर बना सकें। यह अभियान 2 अक्टूबर, 2014 को आरंभ किया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देश को अंग्रेजों की गुलामी से तो मुक्त करा दिया, परंतु 'स्वच्छ भारत' का उनका सपना पूरा नहीं हुआ क्योंकि जब तक हम स्वयं अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक नहीं होंगे, तब तक बापू जी का स्वच्छ भारत का सपना पूरा नहीं होगा। उन्होंने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। आज उस संदेश को पूरा करने का कार्य जन-जन का कर्तव्य होना चाहिए। लोगों की स्वच्छता संबंधी आदतों को बेहतर बनाना स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध कराना स्वस्थ एवं स्वच्छता से जुड़ी प्रथाओं के संबंध में लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना आदि आवश्यकताओं को महसूस कर उनको कार्य रूप में परिणत करना आज की सबसे बड़ी चुनौती है, जिसे स्वीकार कर हम आज के भारत को और भी बेहतर छवि प्रदान कर सकते हैं।

2 अक्टूबर, 2014 को "स्वच्छ भारत मिशन" देश भर में व्यापक तौर पर राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में शुरू किया गया था। स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य देश के कोने-कोने को स्वच्छ रखने से है।

ग्रामीण क्षेत्रों में उचित शौचालयों की व्यवस्था, इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जिसे हमने पूरा करने का भरसक प्रयास किया है। स्वच्छता की सर्वाधिक समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय न होने के कारण स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करने की थी, महिला सुरक्षा की थी और इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में साफ सफाई के प्रति लोगों में जागरूकता उत्पन्न कर उन्हें बेहतर स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करने की थी क्योंकि अधिकांश भारत ग्रामीण क्षेत्रों में बसता है। जब



तक हम हमारे ग्रामीण अंचल को स्वच्छता की आवश्यकता से परिचित नहीं कराते, तब तक बापू का ये सपना अधूरा ही रहेगा। बापू के इस सपने को पूरा करने के लिए चलाए जा रहे सफाई अभियान, कचरा संग्रहण, कचरे की रीसाइक्लिंग कर उससे पुनः इस्तेमाल योग्य वस्तुएं बनाना, लोगों को इस अभियान में जुड़ने हेतु जागृत करना आदि सभी ऐसे प्रयास हैं, जो निःसंदेह एक दिन हमारे बापू जी के सपने को साकार करने में सहायक सिद्ध होंगे।

कठिन फैसला

त्रिपुरारी तिवारी

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय सूचना
प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान, ग्वालियर



मई की भीषण गर्मी का दिन है। सूर्यदेव तीव्र प्रकाश से धरती को मानो जला रहे हैं। ऐसी गर्मी में एक युवक हाथ में एक फाइल लिए भागा जा रहा है। पसीने से उसकी कमीज गीली हो चुकी है। वो युवक बार-बार अपने हाथ में बंधी घड़ी को देख रहा है, जो ग्यारह बजकर पैंतालीस मिनट को दर्शा रही है। भागते-भागते युवक यही सोच रहा है कि यदि वो ऑटो के इंतजार में न खड़ा होता, तो गंतव्य तक सही समय पर पहुँच जाता।

जो युवक भाग रहा है, उसको उसके दोस्त बिस्सू कहकर पुकारते थे। कॉलेज के प्रोफेसर उसे बिस्सू शर्मा के नाम से जानते थे। बिस्सू को आज दोपहर बारह बजे तक इंजीनियरिंग केमिस्ट्री का गृहकार्य प्रोफेसर के पास जमा करना था और जाहिर सी बात है, बिस्सू और आप दोनों जानते हैं, वो समय से पहले नहीं पहुँच पाएगा।

बिस्सू ने भरसक प्रयास किया, जब वो प्रोफेसर के केबिन में पहुँचा तो उसकी घड़ी बारह बजा चुकी थी। प्रोफेसर ने उसकी फाइल लेने से मना कर दिया। बिस्सू की सारी मेहनत बेकार चली गई। लेकिन ये कोई पहला मौका तो नहीं था। बिस्सू का हर बार का यही किस्सा था। जाहिर सी बात थी बिस्सू बेमन के साथ पढ़ाई करता था। उसका खुद का मन इंजीनियर बनने का कभी नहीं था, वो तो अपने पिता की आज्ञा का पालन किए जा रहा था।

बिस्सू के पिता उसे एक सफल इंजीनियर बनाना चाहते थे। किंतु हर बार की तरह इस बार की अड़चन से बिस्सू की हिम्मत ने जवाब दे दिया। प्राथमिक शिक्षा का माध्यम हिंदी होने के कारण

बिस्सू को इंजीनियरिंग की अंग्रेजी में लिखी गई पुस्तकें पल्ले ही नहीं पड़ती थी।

बिस्सू एक फैसला कर चुका था। यह बेहद कठिन फैसला था लेकिन अगर उसे यह कदम नहीं उठाएगा तो उसकी अंतर-आत्मा बिस्सू को कचोटती रहेगी। बिस्सू आनन-फानन में घर लौटा। उसने अपने पिता को उसके फैसले से अवगत करवाया। पिताजी के पैरों तले मानो जमीन ही खिसक गई थी। वो बेटे का यह फैसला न पचा पाए।



लेकिन बिस्सू ने तो जैसे पक्का फैसला कर लिया था। यह फैसला था 'इंजीनियरिंग की पढ़ाई छोड़ने का'। पिताजी भले ही कुछ भी कहते रहे, बिस्सू ने कॉलेज से अपना नाम कटवा लिया। अगली सुबह बिस्सू ने वो कर दिया जो वो काफी वक्त से करना चाहता था। उसने आगे की पढ़ाई हिंदी से स्नातक के रूप में पूरी करने के लिए एक अन्य कॉलेज में दाखिला ले लिया।

हिंदी में रुचि होने के कारण बिस्सू पढ़ाई के साथ-साथ कहानी, कविताएं भी लिखने लगा। कुछ ही समय में बिस्सू ने हिंदी से डॉक्टरेट की डिग्री भी पूरी कर ली। उसकी कविताएं भी राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने लगीं। देखते ही देखते बिस्सू राष्ट्रकवि बन गया। आज बिस्सू के पिता उस पर गर्व करते हैं। बिस्सू कोई और नहीं हमारे देश के युवा कवि 'कुमार विश्वास' हैं। आशा करता हूँ कि कुमार विश्वास की कहानी लोगों को प्रेरित करती रहे।

भाकृअनुप-केंद्रीय आलू अनुसंधान क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर की भूमिका

डॉ. शिव प्रताप सिंह, डॉ. मुरलीधर जे. सदावर्ती, डॉ. सुभाष कटारे
भाकृअनुप-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर

सब्जियाँ संरक्षी तत्व जैसे खनिज पदार्थ, नमक, विटामिन तथा अन्य रासायनिक पदार्थों का बाहुल्य स्रोत हैं, जिनको आहार में सम्मिलित करने से वे मनुष्य के स्वास्थ्य को सुधारती हैं। अतः संतुलित आहार एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिए इनको भोजन में समाहित करना आवश्यक है। माँस, पनीर व अन्य चर्बीयुक्त खाद्य पदार्थों के पाचन के समय उत्पन्न अम्लों को उदासीन करने के लिए भी इनका होना आवश्यक है। सब्जियाँ स्थूल खाद्य पदार्थ हैं, जो पाचन क्रिया को प्रोत्साहित करती हैं एवं कब्ज को रोकती हैं।

कुल सब्जी उत्पादन में अकेले आलू का योगदान लगभग 26% है। आलू की उत्पत्ति साउथ अमेरिका की पहाड़ियों में मानी जाती है। 17वीं शताब्दी में पुर्तगालियों द्वारा इसे भारत में लाया गया था। वर्ष 1941 तक भारत में विश्व के कुल आलू उत्पादन का 1% से भी कम होता था क्योंकि विदेशों की लंबी अवधि की प्रजातियाँ यहाँ बहुत कम उपज देती थी। स्वतंत्रता से पूर्व यूरोप की लगभग 38 प्रजातियाँ भारत में उगाई जाती थी। आलू का उत्पादन बढ़ाने व अपनी तकनीक विकसित करने हेतु वर्ष 1945 में एक स्कीम बनी एवं वर्ष 1949 में केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान की स्थापना पटना में की गई, जिसे वर्ष 1956 में शिमला में स्थानांतरित किया गया। वर्तमान में केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान के 7 क्षेत्रीय केंद्र एवं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत 25 केंद्र हैं। गत 65 वर्षों में आलू की लगभग 68 प्रजातियों का विकास किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों के लिए आलू उत्पादन की तकनीकों के विकास, आलू में लगने वाले विभिन्न कीड़ों की पहचान व उनके प्रबंधन एवं व्याधियों की पहचान एवं उनके प्रबंधन इत्यादि के विकास से आलू के क्षेत्रफल, उत्पादन व उत्पादकता में बेतहाशा



वृद्धि हुई। वर्ष 1965 में आलू बीज उत्पादन की “खेत बीज विधि” के विकसित होने के बाद से भारत में आलू के उत्पादन में विशेष क्रांति आई, जिसका नतीजा है कि आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा आलू उत्पादक देश बन गया है। आज भारत में आलू का उत्पादन वर्ष 1949-50 के 1.54 मिलियन टन से बढ़कर 53.0 मिलियन टन हो गया है।

भारत ने पिछले पांच दशकों के दौरान, बीज उत्पादन की प्रौद्योगिकी के विकास और उत्पादन की तकनीकों के विकास में शानदार प्रगति दिखाई है। बीज की गुणवत्ता और मात्रा में सुधार काबिले तारीफ है। आई. सी.ए.आर. — केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान (सी.पी.आर.आई.) आलू के विकास हेतु देश का नोडल संस्थान है एवं इसके क्षेत्रीय केंद्र भारत के औपचारिक आलू बीज उत्पादन की रीढ़ हैं। आलू की पारंपरिक (कंद अनुक्रमण और क्लोनल चयन) और हाईटेक बीज उत्पादन प्रणाली (सूक्ष्म प्रसार) द्वारा प्रजनक बीज विकसित किया जाता है। केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर देश के संपूर्ण प्रजनक आलू बीज उत्पादन में 20% का योगदान करता है। सी.पी.आर.आई. देश में बढ़ती बीज की मांग को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण किस्मों के प्रजनक बीज के उत्पादन को बढ़ाने के लिए अन्य राज्यों, कृषि विश्वविद्यालयों और निजी बीज कंपनियों को इसकी तकनीक प्रदान करती है। वर्तमान में बीज की कुल मात्रा का 94% उपोष्णकटिबंधीय मैदानों में और शेष 6% पहाड़ी क्षेत्रों में उत्पादित किया जाता है। भारत दक्षिण एशिया का एकमात्र अग्रणी देश है, जिसने न्यूनतम माह अवधि और मृदा जनित रोगों और कीटों की अनुपस्थिति का पता लगाकर उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के लिए वैज्ञानिक बीज उत्पादन की स्वदेशी वैज्ञानिक तकनीक विकसित की है।

वानस्पतिक रूप से वंश-वृद्धि फसलों में गुणवत्तायुक्त बीज की उपलब्धता हमेशा से एक बाधा रही है। आलू के मुख्य रूप से एक वानस्पतिक रूप से वंशवृद्धि वाली फसल होने के कारण उसकी उपज में गिरावट के लिए गुणवत्तायुक्त बीज की कमी जिम्मेदार रही है। आलू के टिकाऊ और लाभकारी उत्पादन के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले स्वस्थ बीज का उपयोग करना अनिवार्य है।

“बीज प्लॉट तकनीक” पर आधारित पारंपरिक बीज उत्पादन तकनीक का पिछले पांच दशकों से भारत में गुणवत्तापूर्ण आलू बीज उत्पादन के लिए सफलतापूर्वक उपयोग किया जा रहा है। इसमें सभी प्रमुख विषाणुओं के लिए कंद अनुक्रमण और प्रजनक बीज उत्पादन के लिए चार चक्रों में विषाणु मुक्त मातृ कंदों का क्लोनल गुणन शामिल है। भाकृअनुप-सी.पी.आर.आई. 25-30 लोकप्रिय किस्मों का 2500 मीट्रिक टन नाभिकीय और प्रजनक बीज का उत्पादन करता है, जिसमें ग्वालियर केंद्र का योगदान 500-600 टन है। इसमें से 70% उत्पादन पारंपरिक प्रणाली के माध्यम से जबकि 30% उत्पादन उच्च तकनीक प्रणालियों के माध्यम से किया जाता है। सी. पी.आर.आई. का उत्पादित प्रजनक बीज तीन चरणों में प्रगुणन के लिए केंद्र और राज्य सरकार की एजेंसियों को लगभग 400-450 टन ब्रीडर बीज की आपूर्ति भारत सरकार के आवंटन अनुसार करता है। सख्त स्वास्थ्य मानकों के प्रोटोकॉल के तहत फाउंडेशन सीड-1, (FS-1), फाउंडेशन सीड-2 (FS-2), और प्रमाणित सीड (CS) आगे गुणन करके राज्य सरकारें उन्नतिशील कृषकों को प्रदाय करती हैं।

भाकृअनुप-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर एक नजर में

भाकृअनुप-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर, भाकृअनुप-सी.पी.आर.आई., शिमला के सात क्षेत्रीय केंद्रों में से एक है। यह केंद्र मूल रूप से अक्टूबर 1978 में मुरैना (म.प्र.) में एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में स्थापित

किया गया था, जिसे अप्रैल, 1981 में ग्वालियर में स्थानांतरित कर दिया गया था। यह केंद्र 26° N, 78° E डिग्री के अक्षांश पर स्थित है और यहाँ 600–800 मि.मी. की औसत वार्षिक वर्षा होती है। इसमें क्षेत्र की मिट्टी बनावट में सिल्टी क्ले लोम है। देश में आलू उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र जैसे गुजरात, पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर भारत, दक्षिण, मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र इत्यादि प्रजनक बीज उत्पादन हेतु अनुपयुक्त हैं, वहीं ग्वालियर की जलवायु आलू के प्रजनक बीज उत्पादन के लिए सर्वोत्तम जलवायु वाले क्षेत्रों में से एक है और यहाँ का उत्पादित आलू बीज उच्च गुणवत्ता का होता है।

प्रजनक आलू बीज उत्पादन के लिए ग्वालियर क्षेत्र की उपयुक्त जलवायु

आदर्श जलवायु परिस्थितियों के कारण ग्वालियर क्षेत्र आलू के बीज उत्पादन के लिए बहुत उपयुक्त है। औसत अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 19–35°C और 5–18°C के बीच होता है जो बीज आलू उत्पादन के लिए सबसे उपयुक्त है। औसत अधिकतम और न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता क्रमशः 70–95% और 35–70% होती है, जिसकी वजह से इस फसल की सबसे बड़ी बीमारी पछेती झुलसा का प्रकोप न्यूनतम होता है। इसके अलावा ग्वालियर क्षेत्र में गर्मी के मौसम में तापमान अधिक (45–46°C) होने से मिट्टी और कंद जनित प्रमुख रोगों जैसे काली चूर्णी और खुरड रोग से मुक्त है जो आलू कंद में होने वाला प्रमुख कवक रोग है।

भाकृअनुप—केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर की भूमिका

भाकृअनुप—केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर ने क्षेत्र में आलू की वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विशेष रूप से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड और जम्मू जैसे अन्य राज्यों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए केंद्र आलू के प्रजनक बीज का उत्पादन करता है। भाकृअनुप सी.पी.आर.आई. को 20% प्रजनक बीज उत्पादन में योगदान देकर केंद्र बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह केंद्र क्षेत्र आधारित समस्याओं पर अनुसंधान और क्षेत्र के लिए प्रौद्योगिकी के विकास और आत्मा, एससीएसपी (SCSP) घटक के तहत किसानों को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से, किसान मेलों और आलू क्षेत्र प्रदर्शनों आदि के माध्यम से भी किसानों को आलू उत्पादन की उन्नत तकनीकी को कृषकों तक पहुँचाने में अपना योगदान कर रहा है। इस क्षेत्र में अगेती फसल में लगने वाले काली डंडी रोग की पहचान व प्रबंधन सर्वप्रथम इसी केंद्र द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र की प्रमुख समस्या बैक्टेरियल विल्ट की सर्वप्रथम पहचान एवं उसके प्रबंधन के उपाय भी इसी केंद्र द्वारा किए गए। इसके अतिरिक्त किसानों की आमदनी बढ़ाने हेतु आलू की कम लागत तकनीक का विकास भी इसी केंद्र द्वारा किया गया।

केंद्र पर बीज उत्पादन

यह केंद्र प्रतिवर्ष 500–600 टन न्यूक्लियस और प्रजनक आलू बीज का उत्पादन करता है। केंद्र के द्वारा विभिन्न सरकारी एजेंसियों और बीज उत्पादक किसानों को लगभग 400–500 टन आलू बीज की आपूर्ति की जाती है। भा.कृ.अनु.प. — केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, ग्वालियर, भा.कृ.अनु.प.—केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला (हि.प्र.) के तहत प्रजनक आलू बीज उत्पादन और आपूर्ति के लिए अग्रणी केंद्रों में से एक है। भारत की आलू उत्पादक सभी राज्य सरकारें प्रजनक आलू बीज के लिए पूर्णतया केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान पर निर्भर हैं।

तालिका 1. बीज उत्पादन के अंतर्गत क्षेत्र, उत्पादन, उत्पादकता, बीज आपूर्ति और राजस्व सृजन का वर्षवार विवरण।

वर्ष	बीज के अंतर्गत क्षेत्रफल (हे.)	कुल बीज उत्पादन	बीज उत्पादकता (क्विंटल / हेक्टेयर)	प्रजनक बीज आपूर्ति	प्राप्त राजस्व (रूपये)
1991-92	26.20	4646.58	198.86	3550.00	18,85,824
1992-93	32.22	3866.91	129.25	2947.40	14,37,685
1993-94	35.38	4953.74	146.44	3820.20	18,32,716
1994-95	33.57	4678.24	162.10	3558.00	18,59,178
1995-96	26.46	4688.16	188.58	3732.61	23,19,120
1996-97	28.65	3954.99	149.10	2715.70	19,86,287
1997-98	40.10	5920.73	145.94	4244.00	20,57,257
1998-99	40.02	6000.80	155.23	3723.00	41,92,125
1999-00	52.51	5959.44	130.20	2379.90	44,87,644
2000-01	35.52	2875.83	91.51	2365.02	24,05,967
2001-02	27.25	3963.71	162.62	2826.46	22,82,911
2002-03	27.35	4365.11	165.54	3180.37	35,24,295
2003-04	29.94	5576.60	190.25	4010.12	38,02,076
2004-05	34.92	4374.16	147.35	3428.00	41,20,600
2005-06	28.19	4342.97	151.55	3218.40	38,24,970
2006-07	31.79	4330.98	146.99	2775.25	38,32,280
2007-08	37.45	4161.41	112.32	2720.39	49,34,345
2008-09	37.81	4710.21	136.51	3317.82	49,79,505
2009-10	28.39	5383.35	197.28	3780.83	61,79,570
2010-11	29.46	4038.68	141.77	2708.14	53,82,730
2011-12	40.84	6034.38	149.04	4301.60	86,29,080
2012-13	35.10	7174.60	204.40	4993.25	1,12,74,679
2013-14	29.91	5438.94	181.84	4522.53	90,57,204
2014-15	29.04	4767.27	164.16	3265.76	1,23,86,770
2015-16	36.32	5826.98	160.88	4491.22	61,64,430
2016-17	33.86	4879.81	144.41	2973.50	1,20,09,537
2017-18	38.68	5185.64	134.07	3492.20	1,14,53,450
2018-19	41.00	5901.33	143.93	4644.92	1,45,76,858
2019-20	37.34	5660.15	151.58	2488.98	1,76,14,757
2020-21	33.90	6186.82	182.50	7256.02	2,72,13,900/-

आलू बीज उत्पादन के अतिरिक्त केंद्र पर अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना व संस्थान की परियोजनाओं के अंतर्गत आलू उत्पादन की उन्नत तकनीकों का विकास, पौध संरक्षण एवं नवीन प्रजातियों के विकास हेतु उनका यहाँ की जलवायु में मूल्यांकन किया जाता है। इसके अतिरिक्त विकसित नवीन तकनीकों को कृषकों तक पहुंचाने हेतु विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन, केंद्र पर विभिन्न सहयोगी संस्थाओं के आयोजनों में विषय विशेषज्ञों को भेजकर प्रशिक्षण दिलवाया जाता है। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर व आई.टी.एम. विश्वविद्यालय, ग्वालियर के स्नातकोत्तर एवं शोधार्थियों को इस केंद्र के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में परीक्षण (ट्रायल) करवाकर कृषि के प्रशिक्षित नवयुवक तैयार करने का कार्य किया जा रहा है।

दैनिक जीवन में हिंदी भाषा का महत्व

त्रिपुरारी तिवारी

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय सूचना
प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान, ग्वालियर



हिंदी के बड़े ही लोकप्रिय कवि आदरणीय सोम
ठाकुर जी ने बड़ा ही सुंदर लिखा है कि -

करते हैं तन-मन से वंदन
जन-गण-मन की अभिलाषा का
अभिनंदन अपनी संस्कृति का
आराधन अपनी हिंदी का

हमारी मातृभाषा 'हिंदी' हमारे विचारों
को व्यक्त करने का प्रमुख साधन है।
मुख से उच्चारित होने वाले शब्द
और वाक्य का समूह है जिसके
द्वारा हम हमारे मन में छुपी
हुई बात रख सकते हैं।

दुनिया में हजारों
भाषाएं बोली जाती हैं और
हर व्यक्ति बचपन से ही
अपनी मातृभाषा अथवा
राष्ट्रभाषा से परिचित होता
है। भारत में मुख्यतः हिंदी को
यह दर्जा प्राप्त है। हिंदी भारत
में सर्वाधिक रूप से इस्तेमाल की
जाती है। साथ ही सरकारी विभागों
में हिंदी को ही प्राथमिकता दी जाती है।

भारत सरकार द्वारा हाल ही में लाई गई नई
शिक्षा नीति, जिसके अंतर्गत क्षेत्रीय भाषाओं को
अधिक महत्व दिया जा रहा है, जो कि वाकई एक
सराहनीय कदम है। इस नीति से अवश्य ही हिंदी को
बहुत फायदा होगा। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कहा
है कि 'मनुष्य ही बड़ी चीज है और भाषा उसी की
सेवा के लिए है।' वहीं कबीरदास जी ने भाषा को
"बहता नीर" कहा है। यदि दोनों विद्वानों के कथन

को मिलाकर देखा जाए तो हिंदी भाषा बहता नीर बनकर
मनुष्य की सेवा कर रही है।

हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री आदरणीय अटल
बिहारी वाजपेयी जी, जो कि स्वयं हिंदी भाषा के बड़े
जानकार एवं कवि थे, उन्होंने देश को हिंदी का महत्व
बताने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा को हिंदी में
संबोधित करके इतिहास रच दिया था। आज
उनका ही अनुसरण देश के अन्य
राजनेता भी कर रहे हैं। हिंदी को
विश्वस्तरीय मंच से वाजपेयी जी
ने दुनिया के कोने-कोने में
पहुँचा दिया। आज अनेक
देशों में, उनकी शैक्षिक
संस्थाओं में हिंदी को
पाठ्यक्रम का हिस्सा बना
कर पढ़ाया जा रहा है, जो
कि किसी भी भारतवासी के
लिए गर्व का विषय है।

एक बात पर ध्यान देने
की बड़ी आवश्यकता है।
आजकल के सोशल मीडिया के
युग में, अंग्रेजी माध्यमों के स्कूलों की
भरमार के बीच हिंदी को बचाना भी बेहद
जरूरी है। कई स्थानों पर हिंदी की जगह अंग्रेजी को
प्राथमिकता दी जाती है। हिंदी बोलने-पढ़ने वालों को
पिछड़ा समझा जाता है। इस मानसिकता को बदलने की
आवश्यकता है अन्यथा जो हाल संस्कृत का हुआ था
(कि अब लुप्त होने की कगार पर है), वो हाल हिंदी का
न हो। उम्मीद करूंगा कि हिंदी सैकड़ों वर्षों तक
भारतीयों का सिरमौर बनी रहे।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर

केंद्रीय सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच की आवश्यकता महसूस की गई ताकि वे मिल बैठकर सभी कार्यालय/ उपक्रम/ बैंक आदि चर्चा कर सकें। फलतः नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया गया। इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/ उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु ग्वालियर, म.प्र. में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर कार्यरत है। प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा प्रथम), म.प्र. का कार्यालय नराकास, ग्वालियर का सचिवालय है।

दिनांक 21.12.2020 को श्री डी. साहू जी की अध्यक्षता में नराकास, ग्वालियर की 84 वीं अर्धवार्षिक बैठक MS TEAMS के माध्यम से ऑनलाइन संपन्न की गई। उक्त बैठक में नराकास, ग्वालियर के 40 सदस्य कार्यालयों ने

अपनी उपस्थिति दर्ज की। बैठक का आरंभ श्री जितेन्द्र तिवारी के उद्बोधन के साथ हुआ जिन्होंने 30 सितंबर 2020 को समाप्त छमाही के हिंदी के प्रगामी प्रयोग से सम्बन्धित प्रतिवेदनों की समीक्षा का वाचन किया। उसके पश्चात् माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा बैठक में उपस्थित सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/ कर्मचारियों का अभिवादन किया गया एवं उक्त समीक्षा पर चर्चा की गई। बैठक में माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन हेतु तथा वर्ष के दौरान नराकास, ग्वालियर के तत्वावधान में आयोजित काव्य पाठ प्रतियोगिता के विजेताओं के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों की घोषणा की गई:-

(1) वर्ष में एक पत्रिका प्रकाशित करने वाले कार्यालय

प्रथम पुरस्कार — रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)

द्वितीय पुरस्कार— प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- प्रथम) म.प्र., का कार्यालय, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

तृतीय पुरस्कार — भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

(2) राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाले कार्यालय

प्रथम पुरस्कार — केंद्रीय विद्यालय संगठन, आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)

द्वितीय पुरस्कार — प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम, म.प्र., ग्वालियर का कार्यालय एवं केंद्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल, टेकनपुर, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

तृतीय पुरस्कार — प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम), म.प्र., का कार्यालय ग्वालियर, (प्रशस्ति पत्र)

प्रोत्साहन पुरस्कार

1. भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

2. राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, अन्वेषण प्रभाग, ग्वालियर एवं राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, अन्वेषण वृत्त, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

(3) नराकास वार्षिक कार्यक्रम 2020 के अंतर्गत आयोजित काव्यपाठ प्रतियोगिता के विजेता

प्रथम पुरस्कार — श्री राकेश रावत, केंद्रीय विद्यालय क्रमांक—1, ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)

द्वितीय पुरस्कार — श्री मनोज कुमार गिरि, केंद्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी टेकनपुर, ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)

तृतीय पुरस्कार — श्री हरिओम कुमार, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम), म.प्र., का कार्यालय ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)

प्रोत्साहन पुरस्कार

1. सुश्री उमा उपाध्याय, केंद्रीय विद्यालय क्रमांक—3, ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)

2. श्री जे. जे. श्रीवास्तव, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय, म.प्र., का कार्यालय, ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)

महोदय,

नराकास, ग्वालियर की संयुक्त पत्रिका “प्रयास” के नवम् अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ, रूपसज्जा एवं छायाचित्र अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक हैं। पत्रिका विविध विषयों को समेटे हुए गागर में सागर के समान है। सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। विशेष श्री मनोहर दत्त उपाध्याय का लेख ‘मातृभाषा में अभिव्यक्ति’, श्री बृजेश सिंह का लेख ‘मातृभूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या’, श्री मनोज कुमार गिरि की कविता ‘माँ’ तथा श्री हरिओम की कविता ‘गांव का भोला’ अत्यंत सराहनीय एवं उत्कृष्ट हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)— द्वितीय, मध्य प्रदेश

महोदय,

पत्र क्रमांक/ प्रशासन/ राजभाषा/ नराकास/ जावक—1459, दिनांक 02.02.2021 के तहत आपके नराकास कार्यालय द्वारा प्रकाशित संयुक्त हिंदी पत्रिका ‘प्रयास’ के नवम् अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। राम गोविंद यादव जी द्वारा लिखा गया लेख ‘स्वाइन फ्लू पर संक्षिप्त विवरण’ अत्यंत ज्ञानवर्द्धक है। पत्रिका के संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु ढेर सारी शुभकामनाएं।

भवदीय,
शान्तनु दास
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2 गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता-700001

महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका ‘प्रयास’ के नवम् अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
असम, बेलतला, गुवाहाटी-29

महोदय,

नराकास, ग्वालियर की संयुक्त पत्रिका 'प्रयास' के नवम् अंक की प्राप्ति हुई है, धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्द्धक एवं मन को लुभाने वाली हैं। श्री मनोहर दत्त उपाध्याय की 'मातृभाषा में अभिव्यक्ति', श्री डी.पी. पाठक की 'हिंदी की दशा और दिशा', श्री मनोज कुमार गिरि की 'माँ' एवं श्रीमती अबिंदर कौर की 'ऐ दिल—ए—नादान' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.),
केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित राजभाषा पत्रिका 'प्रयास' के नवम् अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। आवरण पृष्ठ बहुत सुंदर एवं आकर्षक है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री मनोज कुमार शर्मा (योग का मानव जीवन में महत्व), डॉ. एस.बी. सिंह (गैर संचारी रोगों के निवारण हेतु आयुर्वेद), श्री जे. जे. श्रीवास्तव 'ज्योति' (हिंदी गीत), श्री मनोज गिरि (माँ), कुमारी दुलेश्वरी यादव (एकता टूटने पर) एवं कुमारी प्रियांशी भट्ट (स्वच्छ रहे यह देश हमारा!) आदि की रचनाएं काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम
उ.प्र., इलाहाबाद

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित नराकास, ग्वालियर की संयुक्त पत्रिका 'प्रयास' के नवम् अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा— II पश्चिम बंगाल

महोदय/महोदया,

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी वार्षिक ई-पत्रिका 'प्रयास' के नवम् अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का अंक बेहद ज्ञानवर्द्धक एवं आकर्षक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सारगर्भित, उच्च स्तरीय एवं बेमिसाल हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं, वो हैं — "बेटी बचाओ — बेटी पढ़ाओ, एक चिंतनीय विषय", "मातृभाषा में अभिव्यक्ति", "योग का मानव जीवन में महत्व", "उठो-जागो और श्रेष्ठता को प्राप्त करो", एवं "स्वच्छ रहे यह देश हमारा" आदि।

पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक होते हुए कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का मंच भी उपलब्ध करवा रही है। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका 'प्रयास' राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका 'प्रयास' की निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'प्रयास' के 9वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएं अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी प्रकोष्ठ
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची- 834002

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गयी हिंदी पत्रिका 'प्रयास' इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। संपादक मंडल का प्रयास सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में संकलित 'माँ', 'गाँव का भोला', 'गंगा' व अन्य सभी रचनाएं प्रभावी, सारगर्भित व पठनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के आगामी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II) कर्नाटक

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'प्रयास' का 9वां अंक प्राप्त हुआ इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित श्री मनोहर दत्त उपाध्याय द्वारा रचित आलेख "मातृभाषा में अभिव्यक्ति", तथा श्री डी पी पाठक द्वारा लिखित आलेख 'हिंदी की दशा और दिशा' अत्यधिक प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

सुभाष चंद यादव, हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.) तमिलनाडु, चेन्नई-18

महोदय,

आपके कार्यालय की वार्षिक पत्रिका 'प्रयास' वर्ष 2019-20 का नवम् अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत सुंदर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं विशेष रूप से सुश्री प्रिया विज, (आशुलिपिक) की 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, एक चिंतनीय विषय', श्री जे. जे. श्रीवास्तव 'ज्योति' (पर्यवेक्षक) की 'हिंदी गीत', श्री मनोज कुमार गिरी (प्र.स्ना.शि.) की 'माँ' श्री देवेन्द्र कुमार लवानियाँ (प्र.स्ना.शि.) की "उठो-जागो और श्रेष्ठता को प्राप्त करो" आदि बेहद सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजक, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी प्रकोष्ठ

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

उत्तराखण्ड का कार्यालय

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'प्रयास' के नवम् अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर

महोदय,

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। विशेषकर श्री मनोहर दत्त उपाध्याय, निरीक्षक (राजभाषा) का लेख 'मातृभाषा में अभिव्यक्ति', श्री मनोज कुमार शर्मा, कमांडेंट/अंतर्राष्ट्रीय योग प्रशिक्षक का लेख 'योग का मानव जीवन में महत्व' तथा श्री मनोज कुमार गिरि, प्र. स्ना. शि. (गणित) की रचना 'माँ' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
(श्रीमती पी. एस. शर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)—II, महाराष्ट्र, नागपुर

वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं विभागीय पत्रिका पुरस्कार वितरण
नराकास, ग्वालियर

वरिष्ठ उप महालेखाकार श्रीमती मोना जैन पुरस्कार वितरण करते हुए



कार्यालय रक्षा अनुसंधान एवं
विकास स्थापना, ग्वालियर शील्ड
एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

कार्यालय केंद्रीय विद्यालय संगठन,
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ग्वालियर
शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए



वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं विभागीय पत्रिका पुरस्कार वितरण
नराकास, ग्वालियर

वरिष्ठ उप महालेखाकार श्रीमती मोना जैन पुरस्कार वितरण करते हुए



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
म.प्र., ग्वालियर प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

कार्यालय केंद्रीय विद्यालय, सीमा सुरक्षा बल अकादमी,
टेकनपुर, ग्वालियर प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए



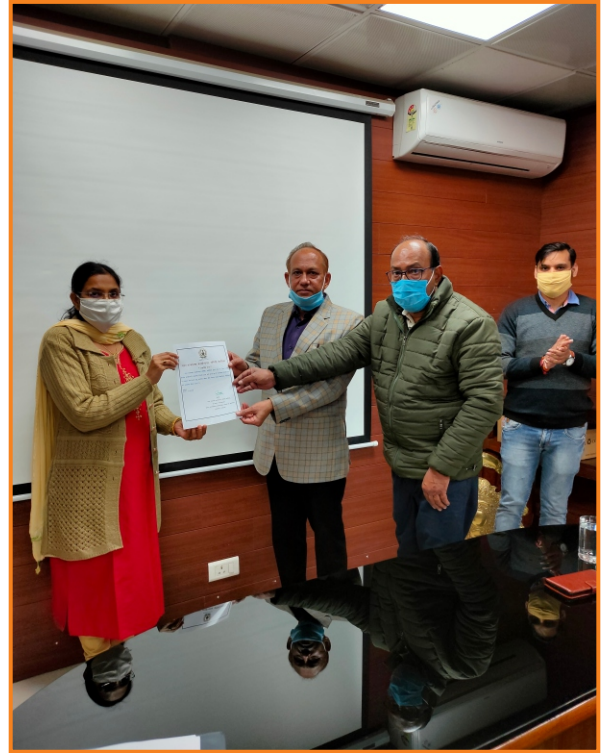
वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं विभागीय पत्रिका पुरस्कार वितरण
नराकास, ग्वालियर

वरिष्ठ उप महालेखाकार श्रीमती मोना जैन पुरस्कार वितरण करते हुए



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
प्रथम, म.प्र., ग्वालियर प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

कार्यालय भारतीय जीवन बीमा निगम, ग्वालियर
प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए



नराकास, ग्वालियर के वार्षिक कार्यक्रम अंतर्गत आयोजित
काव्य पाठ प्रतियोगिता के विजेताओं को
पुरस्कार प्रदान करती वरिष्ठ उप महालेखाकार श्रीमती मोना जैन



केंद्रीय विद्यालय क्र. 1 के श्री राकेश रावत
पुरस्कार प्राप्त करते हुए



केंद्रीय विद्यालय, सीमा सुरक्षा बल, टेकनपुर, ग्वालियर
के श्री मनोज गिरि की ओर से श्री अब्दुल वहाब एवं
श्री डी.के. लावानिया पुरस्कार प्राप्त करते हुए

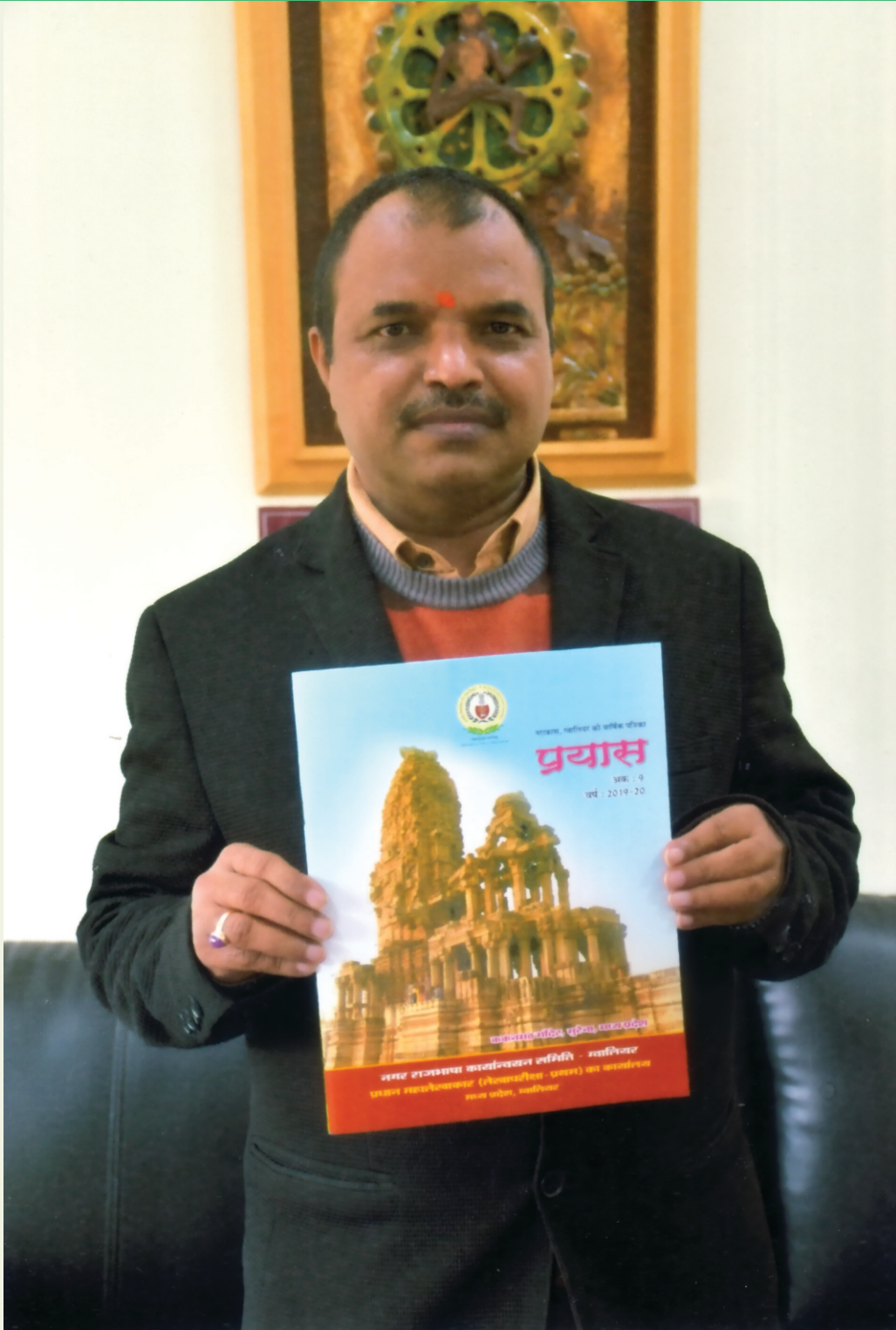


कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
म.प्र., ग्वालियर के श्री हरिओम कुमार
पुरस्कार प्राप्त करते हुए



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)-द्वितीय,
म.प्र., ग्वालियर के श्री जे.जे. श्रीवास्तव
पुरस्कार प्राप्त करते हुए





माननीय अध्यक्ष, नराकास, ग्वालियर एवं प्रधान महालेखाकार
श्री डी. साहू, नराकास, ग्वालियर की
संयुक्त पत्रिका 'प्रयास' के नवम् अंक का विमोचन करते हुए



कलाकृति- साक्षी राजावत